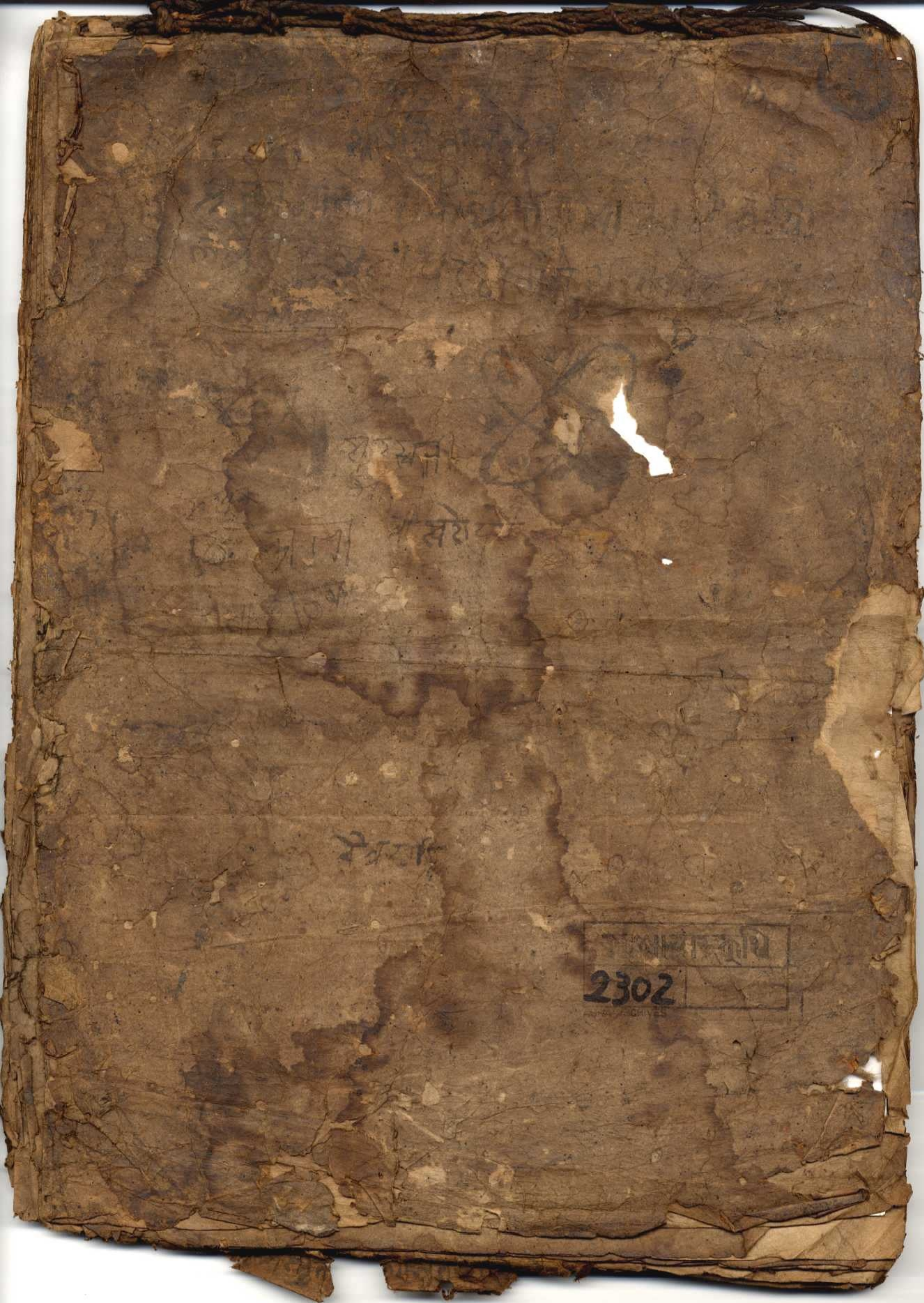




2302

१ श्री गणेशाय नमः ॥ ॥ श्री देव वाच ॥ को हि सप्त य विद्ये पार्वति
ले अंजली जोरि श्री मा हा देव ह्ये विंति गदी भर्तुः हे देव देवका
देव हे मा हा देव संपूर्ण सिद्धि कन गन्धाना तदि प्रभु मला ई मा प्राग

१ श्री गणेशाय नमः ॥ ॥ श्री देवु वाच ॥ को हि सज्जय विद्ये पार्वति
ले अंजलि गोरि श्री मा हा देव ह्ये विंति गदी मर्तिनः हे देव देवका
देव हे मा हा देव संपुता सिद्धि कन गन्या सुत हि प्रभु मला ई मा आग
नु ह्वस ॥ १ ॥

श्री देवु वाच देव देवं मा देवका पां कु तामम परि ॥ सर्व सि
द्धि कर्त देवान कथं यस्तमम प्रभु ॥ १ ॥ कथं वृत्ता गमु मुपुवै
कथं वा परि व र्त्तते ॥ कथं विलि यते देवं क हि वृत्ता गमु सिनं यं ॥ २ ॥

हे प्रभु ओ वृत्ता गमु को ना तर हले वन्यो कस्ता तर हले व र्त्तमान मे रहे ह
कस्ता तर हले जय हो ला तस्का रण ओ वृत्ता गमु को निर्न अमलार् आगु ह
व सु मनी श्री पार्वति ले विंति गन्या मा श्री शं भु ले मा आगु ह ॥ २ ॥

ईश्वर वाच तव वृत्ता गमु मय न्नं ते तन परि व र्त्तते ॥ तव प्रवि
य ते दे वि तव वृत्ता गमु निर्णय ॥ ३ ॥ श्री देवु वाच ॥ तव मे वप
रं मुलं न श्री तं तव वादिभि ॥ तव स्वरूप किं देव तव देव प्रका
सय ॥ ४ ॥

ईश्वर वाच हे दे वि तव ले वृत्ता गमु उत्पन्न भयो को ह तवै मा वर्ति मा
न ह तवै मा ली न ह वृत्ता गमु को निर्णय तवै वृ भनि आगु गन्या मा श्री
वर्ति ले विंति गन्या ॥ ३ ॥ हे देव तव मा वृत्ता गमु उत्पन्न भयो तवै मल
ह तवै मा लिन ह ह भयो त तव को कस्तो रूप ह को त देवता हो क ज्ज
नाम हो भनि विंति गन्या मा श्री शं भु आगु गदि ह ॥ ४ ॥ ४ ॥ मा ४ ॥

ईश्वर वाच ॥ निरंजनी निराकार एको देव महेश्वर ॥ तस्मात्त का
समुत्पत्तं मा काशा द्वा उ संभवा ॥ ५ ॥ पा यु स्त जस तश्चापस्त
त प ॥ श्री समुद्र व ॥ यतानि कं व तत्त्वानि विष्णी नी नि रं व द्या ॥ ६ ॥
तमे वा वृत्ता गमु मय न्नं ते देव परि वृत्त ते विलि यते व तत्रै व तत्रै व रम
मते प्रसा ॥ ७ ॥

हे पार्वति तव कस्तो ह भन्या ते स्को गती अपा र ह निरंजना निराकार नि
राधा एको देव महेश्वरता म ह ॥ ५ ॥ ते स्ते पि आ का स मय न्नं ह ह ते स्ते पि

वायुऽसं नहुं ह वायु देविते जऽसं नहुं ह तेज देवी जलऽसं नहुं ह
जल देवि पृथ्वीऽसं नहुं ह यस्तार हले पं व तत्त्वै लि रसा को ह ॥ ६ ॥
ते पां व तत्त्वै जऽसं नहुं ह ते सै ले व र्त्तमान हुं ह ते सै मा विल ये हुं ह के रि
ते सै तर हले जऽसं नहुं ह ॥ ११ ॥ ११ ॥ ११ ॥ ११ ॥ ११ ॥ ११ ॥

पं व तत्त्व मया देव पं व त्वा नि सु दरि ॥ सऽसं रूपे रा व र्त्तं ते जा य ते त व
यो जी मि ॥ ८ ॥ अथ य व प्र व आ नि स रि र स्वे स्वे दये ॥ हं स चार स
रूपे न भवे आ न त्रि का ल जं ॥ ९ ॥ गु णा गु णा त रं सार म्प का प्र का
स नं ॥ इ दं स्वे द य ज्ञा नं ज्ञा नी नां म स के म ति ॥ १० ॥ १० ॥ १० ॥ १० ॥
हे स द रि पां व तत्त्व जो ह स्व ये क दे व ह सऽसं रूप ले कि दं त्वा मु ष्म रूप जो जी ज
न ले ध्या न ग रि जां द ह न ॥ ८ ॥ ते हि का र्ता स रि वि षे स्वे द ये धि त भ या का वा त म
भ न हुं हं स वार स प ला र्थ यो गि ह ले जां द ह न ॥ ९ ॥ स्वे द यो ज्ञा न क लो हो म
न्या अ ति गु णा उप का र नि त्रि त ति मि ला र्थ क ह न हुं यो स्वे द ये ज्ञं यं ज्ञा न क
लो ह भ या ज्ञा नि ज न ला र्थ उ द्वा र न ग न्यो ग न्यो शि र को म ति ॥ १० ॥ १० ॥ १० ॥
सऽसं सऽसं तं ज्ञा नं सु वे धं म त्प्र त यै ॥ अथ य न स्ति के घो रे
स स्ति के ग र ग र्त्तं ॥ ११ ॥ अथ सि ष्य लक्ष्णे तां तां ते सु दे स द वा रे ग
रु भ सौ क मा रा से ॥ ६ ॥ वि तं कृत सै व दे यं सै व स्वे द यं ॥ १२ ॥ ॥

यो ज्ञा न क लो ह भ या सऽसं दे वि सऽसं अ ति सऽसं व द न तं द र्जा न ह स
ते ह कै ले ता स न हु न्या स र ग र्त्तं न्या ह ॥ ११ ॥ इ तं सार मा भे स ज्ञा न ह क
ला रा अ ति ज्ञा न ह ॥ १० ॥ अथ सि ष्य लक्ष्णे ता ॥ यो स्वे द ये ज्ञा न क लो सि ष्य लो
र दि नु भ न्या तां त ति र्म ल पु त्रि ग न्या का ॥ ग र ग र्त्तं ये क म न भ या को रे ते
वि ष्य ला र्थ यो स्वे द ये उप दे स दि नु ॥ १२ ॥ १२ ॥ १२ ॥ १२ ॥ १२ ॥ १२ ॥ १२ ॥ १२ ॥
इ षे व क र्त्तं कु र्त्तं स र ग र्त्तं ले ह न स ते पु र श्वा रे स्वे द यो न दि ये त ॥ १३ ॥ श्री
ता वं क र्त्तं दे वि दे ह स्य ज्ञा न म त्त मं ॥ ये न वि ज्ञा मा त्रे ता स वि ज्ञा र्त्तं प्र ति मे
ते ॥ १४ ॥ स्वे द वे द श्व सा त्वा नि स र गां ध र्व मृ त्त म ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

स्वे द व स वै त्रे लो क्यं स्वे द मा त्त स र प के ॥ १५ ॥ १५ ॥ १५ ॥ १५ ॥ १५ ॥

स्वे द ले ता न लो क व या को ह स्वे द लो ह आ ज्ञा त प च ॥ स्वे द ति भ या का ज्ञा नि जो ह न

स्वरवसर्वै त्रैलोक्यं स्वमात्मस्वरूपकं ॥१५॥ १५॥ १५॥ १५॥ १५॥

स्वरैले तीन लोकवयाको छ सरैलो छ आमा रूप छ. स्वरहित भयाका जामि जो छन
स्वकला छ भया मानिसन भयाको घर जस्तो छ ॥१६॥ सा स्वन जा न न्याव
ती जस्ता हिन भया का सारि जस्त तस्त त योनको भेद मक हुं हु नाश भेद प्रा
न भेद तव भेद सुभरा भेद मिश्र भेद जो जान दछ समुक्ति हुं छ ॥१७॥ १७॥

स्वरहितं वदेव ज्ञाना धरितं ये भाग हुं ॥ स्वरहितं ये भावका सिरहितं व
ये छ ॥१८॥ राशि भेद त भा प्रा रां त व भेद त ये वत ॥ स्वरिता मीश्र
भेद व ये जाना तिस म रुये ॥१९॥ १९

सकारले पनि निराकारले पनि त्यो वायु कन विवा गर्नु ॥१८॥ हे वशन ने थोरै
स्वरज्ञान म भन्नु सुन यो प्रला राउ खराउ जो छ स्व स्वरैले वना को छ ॥१९॥ स्वर
जो छ भुक्ति स्थिति संसार पाल नाग की सा आत्म हे शर छर स्वरज्ञान देखि अरु
ज्ञान गुप्त के हि छैन स्वरज्ञान देखि अरु धन छैन ॥२०॥ स्वरज्ञान देखि अरु मंत्र भरु
न न छैन न देव नु सरैको बल ले सबु म छर मित्र मिल छर सुभ हुं छ ॥२१॥ २१॥

साकारे वा निराकारे भु भुं वायु बल भेते ॥ कथयंति भु भुं किं वितर स्व
रज्ञानं वशन ने ॥१८॥ प्रला राउ खराउ पी रा यं स्वरैले वसित कितं ॥ भुक्ति सं
रकार व स्वर सा आत्म हे शर ॥१९॥ स्वरज्ञान तरं गुलं स्वरज्ञान तर धनं
स्वरज्ञान तरं मित्रं न वा दृखं न वा श्रुतं ॥२०॥ सबु हुन्या स्वर वले तथा मित्र
सो मा गमे ॥ लक्ष्मी प्राप्ति स्वा वले किं विस्वर सुखं ॥२१॥ २१॥ २१॥ २१॥
स्वरैका बल ले लक्ष्मी प्राप्ति हुं छ किं विपनि कन्या प्राप्ति पनि स्वरै का बले हुं छ रा
जा दुर्लभ पनि स्वरै मा प्राप्ति हुं छ ॥२२॥ देव ता को सिद्धि पनि राज वस्य पनि प्रदे स गम
न पनि सो जान पनि स्वरै का बल ले भु भु ॥२३॥ वा जो पनि दुर्लभ पनि सर्व सा लभ पनि
स्वरै ल प्रप्ति हुं छ ॥२४॥ हे वशन ने स्वरज्ञान देखि अरु जो तल छ स्व के हि छैन मी
था वार मान्ने छ भ्रमन का रूप मात्र छ ॥२५॥
कन्या प्राप्ति स्वर वले स्व वले राज द र्शन ॥ स्वरै व देव ता सिद्धि स्वरै मे
ति वरं ॥२२॥ २५ २५

देवेति यजता यच्चैकविंशंतिविशया ॥ प्रधानादस्य कृतास्तु दत्तनादिप्रवा
 लका ॥ ३३ ॥ तिष्ठतु मया संस्था वायु देहस्य मवित ॥ वक्तुं स्थिता देहे

देवेति चिंता यच्चै कविं संति विराया ॥ प्रधानादस्य कृताडिस्तु दसनादिप्रवा
 हका ॥ ३३ ॥ तिष्ठ ह्यस्य संस्था वायु देहस्य मवित ॥ चक संस्थिता देहे
 सर्वप्राणा समाश्रिता ॥ ३४ ॥ तातो मध्ये दसने कंदसानो तिष्ठतु मरि
 तादि गला वेत्तु मुख्याडिस्तु तिष्ठेत् ॥ ३५ ॥ गंधादि हस्तीनि जिह्वा पुष्पा वेत्तु
 साक्षिनी ॥ अवुष्मा कुदुक्षे वसं विनि दसनाति ॥ ३६ ॥ ॥ ३६ ॥ ३६ ॥
 तै हिकुडलि देहि दसनाडि उच्यते दसनाडि उच्यते दसनाडि उच्यते ॥ ३७ ॥
 नैला ह्ये विं सनाडि कर्हि ॥ ३८ ॥ तै वै विं स मध्ये दसनाडि उच्यते ॥ ३९ ॥
 नाडि कस्तो छ भन्ना वारे तदभा के लिरहा के ॥ ४० ॥ यो प्राणा कस्तो छ भन्ना
 कस्तो का वक्ति जहि मे वै वी सक्ति दहन् वै विं स मध्ये दसनाडि उच्यते ॥ ४१ ॥
 दसनाडि शा म सुन ह्वा जी गला सखना ओर गंधादि हस्तीनि जिह्वा पुष्पा वेत्तु
 दशावमेस्थिता भागे दक्षी तो कर्हि ॥ ४२ ॥
 वक्षुषि ॥ ४३ ॥ दक्षी तो हस्तीनि जिह्वा पुष्पा कर्हि वक्षुषि ॥ ये ती स्त्री निवास
 कर्हि भागने वाप्यलं पुष्पा ॥ ४४ ॥ कुन्व लिं ग देहे तु मलया ने वसं विनी ॥
 य वक्षु रसमाश्रित कंति दसनाडि कर्हि ॥ ४५ ॥ ॥ ४५ ॥ ४५ ॥
 अलं पुष्पा कर्हि संस्थिति यो दसनाडि ह्वा नाडि शा म भाग मा जी गला दक्षि शा भाग
 मा कर्हि ॥ ४६ ॥ स मशा मध्ये दसनाडि कर्हि गंधादि शा म भाग मा कर्हि पुष्पा दक्षि शा क
 र्हि ॥ ४७ ॥ ये ती स्त्री निवास कर्हि मा कर्हि स मशा डाल वक्षु कर्हि लं ग देस मा कुदु
 का र्हि कर्हि गला दक्षि शा कर्हि ॥ ४८ ॥ ये स्ता तरु हित दार २ मा दसनाडि रसाको कर्हि
 दशापि मशा सुमशा प्राणामागे समाश्रिता ॥ स्ता हि दसनाडि देह मध्य मवस्थिता ॥ ४९ ॥
 नामानी नाडि कानांतु वातनां पुवदाम्यह ॥ प्राणा याणा समानश्च उदानो व्यानयवच ॥ ५० ॥
 नाग कूर्मो थरु कर्णे देव नो धनं जये ॥ हृदि प्राणो वसे नीत्य मपान गुद मण्डले ॥ ५१ ॥
 यत्ता तरु हित दार २ मा दसनाडि रसाको कर्हि दशापि गला सुमशा नाडी प्राणा का रसादन ॥ ५२ ॥
 दक्ष कारणे दसनाडि देह मध्य वस्था कादन नाडि काना भग्ने यो अव वायु काना म कर्हि सुने ॥ ५३ ॥
 प्राणा वायु समान वायु उदान वायु ताग वक्षु कूर्म वायु ह्वा कलो वायु देव दक्षि नं जय वायु ह्दस वायु
 नाम दन् हति काथान कर्हि सुन ॥ ५४ ॥

अप्राणा वायु

स्तानां जी दसनु दान कंठ मध्यग ॥ व्यान व्यापि सति देकु पुष्पा जा दल वायव ॥ ४३ ॥ प्राणा प्रा
 णि व्यापानां गा मा पव वायु ॥ ते वा मापि च पंचांगी स्था नानि विव हाम्य हे ॥ ४४ ॥

प्रकटं प्राणसंवाहं तथैवेदमयेत ॥ ईडापीव गलास्य मनागडिभी
विश्वभीवुधा ॥ ४७ ॥ ईडावामेव विज्ञा अविंगला दक्षिणोऽस्य त ॥ ईडा
साडिर्यतावामेतातावेलावपि गला ॥ ४८ ॥ ईडायेसथीतं वडुकीगलाः
यां वभास्करस्य चरासंभुतेन सतु हंसस्य रूपकं ॥ ४९ ॥ मन्त्रीरूपस्य
तव द्रवामनाडिप्रवाहक ॥ दधेनाडी प्रवाहं श्रुं अरुपिदिवाक ॥ ५० ॥ ५० ॥
ईतीदं सनाडिमाडिवाकि ईदं प्रकटं प्राणकाविवाले जोगि जोगलले जोगदुद ॥ ५१ ॥
ईडापीगलास्य मनादिति तिगनाडिउतु मकर वा आ ईडा दानिना पीगला मध्येमा
सुं असाह ॥ ४८ ॥ इति तिनेनाडिमाया सुकी ईदं ईडा मा वं डमा हं हं विगला मा ह
ये हं हं स्य मा सां भं हं हं स्य हपी दिवाका ह ॥ ५० ॥ ॥ ४९ ॥
हकारे निगम प्रे हंसकारेते प्रवेशनं ॥ हकारे निवह देरा तका ट सक्ति तबि ते ॥ ५१ ॥
सासेन कार संस्थिता ये दानां दिचेते युजे ॥ तदा नजी वलो के स्मिन् कोटिको टी फल
लभेत् ॥ ५२ ॥ अनल भेये योजी ये कवि नृसमाहित ॥ सर्वमेव विज्ञाना या आगि
वे सये वेदुयो ॥ ५३ ॥
हकारे वाहिनिस्त्रि रद्य तका लेभी नृप्रवेस हं हं हकारे निवह पि हंसका सक्ति रूप ह ॥ ५१ ॥
सासकारे त भया स्या अनुसक्तिमा भया त्रयो योजिके वदुत आनंद मये सुरवा हं हं को
टिको टिपुरा ॥ ५२ ॥ ॥ ५३ ॥ अने प्रकारे निचे कवि तगारी वायुला ई दे धन गनी र
त जोगिले वं ड सु ये आका वसे गार ॥ ५२ ॥ ५३ ॥
आ ये सत सस्थि रे निवे अस्थि रे न कदा नन ई अस्थि दि भवे नृस्य मसला मो
न गंत था ॥ ५४ ॥ वडु ये सदा भया स्य सुर्वेति सदा नरा ॥ आतता ना गंतं ज्ञानं
तपो हसा गंतं सदा ॥ ५५ ॥ गजे वा मरुत पस्या नृगदा या ये वे पट ॥ दक्षी ने वरु मा
गेन जग दुप्या पये सदा ॥ ५६ ॥ ॥ ५६ ॥ ॥ ५६ ॥ ॥ ५६ ॥
संपूर्ण काम मा वं ड सु ये सार जांनु तलमि र भया मा वि गार गनी जो ये सका ले विवा रे हला
ई कलि लीला म डये ह्व स ॥ ५७ ॥ सुर्ज वं ड को जो अ भ्या स गंधन तव लि डि प्राप्ति ई हं
जले सार को विवा र गंधन तिने जोगि हेतु अ भ्या का ध्यान पनी आ के प्राप्ति हं हं ॥ ५८ ॥ वाभा
नाडि अमृत रूप हं जग को प्राप्ति पाल गंधन दाहिना डि वर भाग वं ज गली उ ह्रा दन ग
मये मा भव ति कु दा दुष्का सर्वत्र कर्म सु ॥ सुर्वे त्र भु म्भका जे वामा भवति प्रचीता ॥ ५९ ॥
निगमे तु सु भा मा प्रवे से दक्षी रो स भा ॥ वं ड सु विजे ये र वि सु वि
विष से ला था म सदा ॥ ५८ ॥ वं ड सु पुरुष सुर्ज वं ड जो रे मि तो र वि ॥ वं ड ना डि प्र
वा ले व ये मा सो म क र्म नी का ये त ॥ ५९ ॥ ६० ॥ ॥ ६० ॥ ॥ ६० ॥
मये मा सा डि जो हं हं अमी ला ई नि स्फल हं कर्म वं ज संपूर्ण सभ कर्म वां भा ना डि मा
प हं हं ॥ ५९ ॥ गमन गनु वां भा ना डि मा वदि यां हं कि नु दाहिना ना जी मा वदि मा

इह भु म्भका ये वं ड ना डि जो हं जांनु विम मका ये सु काना जांनु ॥ ५८ ॥ वं ड
सि स प स्ये गृह स प हं वं ड जो रे स प हं स्ये का लो द तला त भु म्भका ये
वं ड मा गनी आ स भ कये स्ये मा गनी ॥ ५९ ॥ ॥ ५९ ॥ ॥ ५९ ॥

इह शुभकां र्ये वंदनाडिजे द. जांनु विसमका र्ये सु काना जांनु ॥ ५८ ॥ वंद
सिद्धप र्ये गृहसप्तद. वंदगे तेरुपद. र्ये कालो द. तला त शुभकर्त
वंडमा गनु. असु भ. कर्त र्ये मागनु ॥ ५९ ॥ ॥ ५९ ॥ ॥ ५९ ॥

स र्ये नाडि प्रवा हेव र्ये द. कर्त र्ये का र्ये त. सुष्म ना वा प्रवा हेव सिद्धि
मृत्ति फला निव ॥ ६० ॥ ओदो वंदति ते पक्षे भास्कर सुसितो हो ॥ प्रति
पुदिन मार भ. त्रि. त्रि. शि. क. मी. द. यं. ॥ ६१ ॥ सांदि दि. धा. टि. का. से. ये. शु. क. क.
के. रा. सि. र. वी. ॥ वरु स. क. दि. ने. ने. व. यथा. अ. धि. धा. टि. क. मी. त. ॥ ६२ ॥ ॥ ६२ ॥

स र्ये नाडि मा मो. ह. न. ७. बा. र. ना. द. क. ७. मं. त. तं. त. सा. ध. ना. क. मं. गनु. ॥ सुष्म
ना. रा. ना. डि. मा. क. म. क. मं. गनु. ॥ ६३ ॥ श्व. र. को. वि. त. ना. गनु. मृ. ति. को. फ. ला. सि. दि. धा. टि. क. मी. त. ॥ ६४ ॥
॥ ६० ॥ सु. क. प. शे. ला. ग. द. वं. ड. उ. द. ये. ले. ला. क. म. प. शे. मा. स. र्ये. ७. द. ये. हुं. द. प. रे. व. के. दि. वि.
क. र्ये. सं. ग. वि. का. र. गनु. सु. क. प. शे. मा. प. रे. वा. दि. ति. या. त. ति. या. दि. न. फे. ला. ग. रि. स.
र्ये. वं. ड. प. ल. के. रि. धा. रि. प्र. मा. रा. आ. धा. ई. धा. रि. क. ल. अ. ठा. ई. धा. रि. शु. क. म. मा. पां. व.
ग. रि. मे. ना. हुं. क. ज. से. तर. ह. ले. अ. ले. रा. त्रि. को. सा. टि. ६०. धा. रि. हुं. क. ॥ ६२ ॥ ॥ ६२ ॥

प्र. के. क. से. धा. रि. पं. व. क. मे. ने. वे. ध. यं. ति. व. क. मा. प्र. के. क. ना. आ. ल. त. ता. नां. प. थ.
सु. दु. व. ॥ ७० ॥ अ. ले. रा. व. र्ये. म. धा. नु. त. या. द. द. ल. स. क. मा. ॥ ७१ ॥ अ. ध. क. क. र. क. म. मा.
लि. म. ग. मि. ना. नि. ला. के. ॥ ७२ ॥ अ. ले. रा. ति. ह. ध. नु. धि. व. तु. ला. यां. मि. धु. ने. ध.
॥ ७३ ॥ द. यो. द. धि. रो. शु. म. स. मा. स. मा. वि. नी. र्ती. ये. ॥ ७४ ॥ ति. दे. पु. र्वो. ह. रे. वं. डो.
मा. नु. प. श्वि. म. द. मे. ये. ॥ ७५ ॥ ना. आ. प्र. वा. हे. ता. रे. तु. न. ग. आ. म. प. श्वि. मे. ॥ ७६ ॥

र. ता. त. ले. वि. वा. र. गनु. दु. ई. ला. का. वी. वा. म. धं. नु. २. धा. रि. कि. र्द. क. न. क. मं. ग. रि. क. न.
पां. व. त. ल. ने. रा. २. पी. र्द. ॥ ७७ ॥ अ. ले. रा. व. र्ये. नि. वा. द. सं. का. ति. हुं. क. को. ७. २. म. न्या.
मे. ध. क. म. मि. धु. न. क. र्द. टि. नी. ल. क. म. तु. ला. वी. श्री. क. ध. नु. म. का. कं. म. मि. त.
मे. से. तर. ह. ले. वा. ह. ल. का. ति. हुं. क. ॥ ७८ ॥ क. ला. तर. ह. ले. वि. वा. र. गनु. म. न्या. ७. त. र.
पु. र्व. वं. ड. मा. को. वा. स. क. म. धि. म. र. र्ये. म. स. र्ये. का. वा. म. ध. ॥ ७९ ॥ ॥ ७९ ॥

वा. म. की. र्द. प्र. वा. हे. तु. न. ग. के. पु. र्वो. ७. त. र्द. ॥ ८० ॥ धा. रि. पं. धि. म. यं. त. द. य. ग. ते. मे. न.
नि. व. रे. ते. ॥ ८१ ॥ त. ला. त. र. ग. तं. त. कं. पु. र्वो. स. र्व. दि. ते. प. स. ॥ ८२ ॥ त. प. त. र. त. स. धा.
७. म. ॥ पु. रे. व. न. सं. स. ये. ॥ ८३ ॥ ॥ ८३ ॥

॥ ८४ ॥ ॥ ८४ ॥

शुक्लपञ्चमि तिथा यां डोकेन हति वंद्य ॥ दृष्ट्या तत्प्राभेदं संभवे सौम्ये
प्रज्ञायेते ॥ १५५ ॥

सूर्ये मा दृष्टि न पश्ची मनजानु वंद्य मा पर्व ॥ तृतीया न जानु कथं कस्या सुखा भवे
हृदय चादान आकल ॥ १५६ ॥ तस्मात्तु धनु न ले गत न गरे ह्येन वजि ॥ स्यात्तु
जीवत्त पति मत्पु हं हं संस यहे ॥ १५७ ॥ स अथे मा वंद्य वले स सर्व का र्ये सि
द्धि होला मत्पु विवा रज माला भवत्त जये ह्यत् ॥ १५८ ॥ ॥ १५६ ॥ ॥ १५७ ॥

पदे ता वद्य टे मध्ये पं व तत् विनी दिहेत ॥ प्रति य तो दिने त्पा दु धी परि ते वि
प र्जयो ॥ १५९ ॥ शुक्ल पञ्चमे भवे द्या मा कृत्त पञ्चमे व द्यते ॥ जानी या त्पति
यत्पु र्के गोपित दृष्टि मा ताल ॥ १६० ॥ ॥ १६० ॥ ॥ १६० ॥ ॥ १६० ॥ ॥ १६० ॥
॥ द द्या ति गुण संघा त वि परि ते वि प र्जमा ॥ १६१ ॥

ते सौ त र ह ले ई शा वि ग ता पां व द्य वि वि तृ ह ॥ र क सर मा आ ह २ परि वि पां व त्प्रा
दि र्द क ॥ १६२ ॥ तस्मात्त प र्दे वा का दिन दे क्षी वि वा र ज न ॥ धा टि या व डि य वि वा र
ज न ॥ शुक्ल पञ्चमे वा १६३ ॥ कृत्त पञ्चमे द्या हि ना हं हं यो वी वा र जानी क न मो ह्ये ना वि
भवे ग रि नां जि न न प्र त ज्ञा न ग र्द ॥ १६४ ॥ प र्दे वा का दिन दे क्षी वि वा र ग र्दु वं द्य
ले १६५ ॥ यो ह्य ये ई ज्ञा ल भयो स यो उ द्य ह वत्त व ति या ह्यत् ॥ १६६ ॥ ॥ १६५ ॥ ॥ १६५ ॥

शुर्जे यो यद्य सूर्ये वंद्य वंद्ये द्यो भवेत् ॥ ति संति सर्व का र्य नि दि वा र
॥ १६७ ॥ त्रि ग ता न्य पि वं द्ये का ले ये सु र्जे स र्जे व न्द्रो द यो भवेत् ॥ १६८ ॥ ॥ १६७ ॥ ॥ १६७ ॥
हो ला नि शु र्जे स र्जे नि वा र ये त् ॥ १६९ ॥ ॥ १६९ ॥ ॥ १६९ ॥ ॥ १६९ ॥ ॥ १६९ ॥
मे के ॥ १७० ॥ त ति यं ग म ता प्रां तं दु ष्ठ नि रं व त्पु र्थ के ॥ १७१ ॥ पं व मं र ज
वि धा सं ष ये स र्वा र्थि ना त न ॥ स प मे द्या धि दुः ख नि अ क मे म
स सा दि से त् ॥ १७२ ॥ ॥ १७२ ॥ ॥ १७२ ॥ ॥ १७२ ॥ ॥ १७२ ॥
त भला ह्ये न नि को अ र्ध रा त्रि वं द्ये क को र्ये स भद ॥ १७३ ॥ व द्य मा
सूर्ये सूर्ये मा व द्य मा उ द्ये भयो मत्पु स भवत्त क्य ह्यत् भया उ द्य
कल हा नि ह्यत् ॥ १७४ ॥ ॥ १७४ ॥ ॥ १७४ ॥ ॥ १७४ ॥ ॥ १७४ ॥
ग नु प्र लो थो पा ला मा दुः ख हा ला पां व द्य पा ला राजे वि धं स ह्ये ले पा ला

सर्व का न ह्य सा त पा ला हो ति आ उ पा ला मत्पु हो ला ॥ १७५ ॥ ॥ १७५ ॥

सर्वका नष्ट सा त पाला होति आ उपाता म त्पु होला ॥ २०॥ ॥ २०॥

कलत्रये तिदा मच्छेति पतिं यदा वेहता ॥ तदा दुर्कं फलं प्रोक्तं
किं की सुखा तस्य भव ॥ एव प्रात मध्याह्न या श्रद्धं सांघां कादिवा
फरतदनि सं जायेता भं विपतिं तं द्याव दं ॥ २२॥ धामे वा दशा
वापिः यत्र संकमते सुवि ॥ कला तला दपा देव या वा भवति ति
दिदा ॥ २३॥ बंदे म म पदा का र्ये विस्तु विष म सदा ॥ प्राणि पादं
उरस्व साया भवति सिद्धिदा ॥ २४॥ ॥ २४॥ ॥ २४॥

रसातरुले भुये मा वंद वंद मा भु ये विपति भया उप्ति भ ये मे हला ॥ २५॥
केरि थो है फल क हं कु प्रभात प्रा र दो पहर मा वंद सांघां काल मा भुये ह
वस भला कु दुः ख दु र हव स लाभ जये हव स ॥ २६॥ भुये मा भया तपनि वं
द भया तपनि जा हा स कां ति परो ला पति ला भक र क र क थं मा या सं
सिद्धि हव स ॥ २७॥ सभ कां भ वं द मा गनुं वि स म कां म भुये मा गनुं जा
दे ह मा ख र क सो हि पे र उ ग डि ग हं त का र्यो सि दि ह ॥ २८॥ ॥ २८॥ ॥
वं द वा रे व तु व्या दं पं व पा द श्व भ क र ॥ सु वं व ग म हो भे सं सा ध
ये दु व ता व यं ॥ २९॥ यं रा जे व र तं वा यु क्त ग म्प का स त ॥ स ये वी
तो म्प प प ल भ ते वा हि तं प लं ॥ ३०॥ पा र द हे प र का ह ग ह नि
ग म हो पि व य द जे व ह ते ना ड ग्रा ह ग ति क रं प्री ति ॥ ३१॥ ॥ ३१॥
वं द मा को वा र पा द्ध भुये पा व पा द्ध य सा प्र का र से ग म न ग रो स का र्ये
सिद्धि हव स ॥ ३२॥ जो न यो ग मा वा यु पि र्द हं तै हा त ले का म हं द्वा हा ना
उ ठे र जो न हा द्वा र हा त ले म्प के रे सा वां का फ ल हव स ॥ ३३॥ दे व स
पति ले व स पति भ लो क ॥ त र्थ जो न दे ह मा जि व क सो र्द उं ग अ धी ग
नुं ये सो जो गो स य स क न कां तुं लि प नि न वि जो ॥ ३४॥ ॥ ३४॥ ॥
न हा नि क ल हो ने व कं व के नी पि वि अ ते ॥ नि व र तं तु जे व स र्वा प द
व न जि र ॥ ३५॥ गु ह वं धु न पा प्या स अ न्ने पि सु भ दा ई ति ॥ त र्थ र व
लु क र्थे वा का र्ये सि दि ति मि र तां ॥ ३६॥ आ नो र ध ना ती या अ ने वां
का दि मि ग्रा हा ॥ का री वा प लु रि क्तां यां ज ये ला भ स पा र्थ मि ॥ ३७॥

हस्ताप्रकारेण गगनगणेश सखपुर्वकदा आल्ला तस्मिन् नलवि कनिहनेन सं
कलैश्च गगनगणेशपतिविवाहपवित्रु याहेन सुर्वउप द्रुपतिन हवत् ॥ ८८ ॥ गुरु
मया हाडा भया वडा मुनिजन मया भाडे भया सुकर्ष भयो खेरे मागु
तिदिहं ॥ ८९ ॥ पुगी अंगमि ननु कार्ये सिद्धिं हं सनु भयो वार भयो अरु
धर्म भयो वहुते भले ॥ ९० ॥

दुरदे से विधा तव्यं गमनं तु दि म प्रतो ॥ अंगरी दे सदि प्रेतु तरा विवित कं वन
॥ ९१ ॥ यकी विपुर्वं सदि हं ला भादि स म राग म तत्पुर्वं प्रती ना डि चु जाये ते नि
विलम्बं ॥ ९२ ॥ अने ना डि विपर्यस्तं म पुर्वं प्रति पादितं जाये ते नान्यथा वैव
मथा सर्व भू भाषितं ॥ ९३ ॥ जमे को सु ख को जम ला ई ई हं शुक्ल पशे को
वेधि नो प्रिव तु दे सि वं द माली का र्ये गनु दुर दे स गम न पति वं दे म ना गनु ॥ ९४ ॥ टी
सा स र अिला डि कां म गनु कोने कां म हव ल पति वि वार गनु संपु र्ति मेले भया को
जो ह सो मन मा कल्प ना त लि क न पु र्ति अं ग लि का गनु ॥ ९५ ॥ शुने ना डि मा पे ले
मेले व डि ता ग ना को न गनु जो वा त ~~न~~ ते क सि व को वा के ह ॥ ९६ ॥ ॥ ० ॥

ध व ल र प लो डा टे दो ष वि द्या रि वं का । क वि ता खा मि वे रा या पु र्ति धा रं भ
मां क रा ॥ ९७ ॥ दुरा वं ते शु भ श्व द्रे नि वि द्ये ने क सि दि द ॥ प्र वे रे का र्ये
ह तौ तु शु र्ये ति द्र प्र म स्य ते ॥ ९८ ॥ वं प्र वा रे वि रं हं ति शु र्ये वे ला व र न
ये त ॥ स म ना यां भ वे लो अ म को दे वो वि द्या रि त ॥ ९९ ॥ ९९ ॥ ० ॥
वी ग ग मा मां ली क स ग जा नु भयो भयं क र ज ग मा जा नु भयो ॥ १०० ॥ का धा ग
नु भयो वि द्य गनु भयो वां क सि दि गनु भयो ह ती का र्ये भु र्ये भ लो ह ॥ १०१ ॥ वं
प्र वि ष म द शु र्ये ले प ल मा ई ई हं स म रा र के व मे मो शे ग ई ॥ १०२ ॥ ० ॥
अ यो म यो म त ना डि यो म स्या ने ष यो म त ॥ आ र्थी नु वं ध नि जी व क र्थं स
त मा व रे त ॥ १०३ ॥ शु भा शु भा नि का र्ये नि क्रि ये ते ह नि सं य द ॥ त द का र्ये ति
रो धे न का र्ये ता डि प्र वा ल नं ॥ १०४ ॥ अ थ ई ड ली र क र्म न्य लं का रं दुरा ध ग
म ने तथा आ भ्रा मा दै ब प्रा प्रा सा रे व सु ना तं ग्र हे प वि ॥ १०५ ॥ १०५ ॥ ॥
ह पा र्ति जो म हा डि अ जो म ना डि प नि ह पा र्ति ले वि त्ते ग कि न दे प्र भ जो म

ना डि अ जो म ना डि क स ये स्तो भ या प कि । नि व को का र्ये क स ग रि ले लां ॥ १०६ ॥ धा
या प डि या क र्म स वे ग के र त स र्थ नि व को कां म ज सो व र हं क वि सार ति आ भ्रा
गनु ह्व स भ नि वि त्ति ग ना मा सं भु आ भ्रा ग कि ॥ १०७ ॥ अ थ ई ड ली र क र्म अ
लं का र भ्रा म रा र क र्म

नाडि अजोग्गपण्डिक स्वये स्तोभयापकि. निवको कार्ये कखगहिसेलां ॥११॥ धा
या धडिया कर्म सवेगकेरु तसर्थ निवको कां मज सोवरुं कविस्तारि आशा
गने ह्वस भनि विविगना मा संभु आशा गकिर ॥१२॥ अथ ईडा र्णीर कर्म अ
लं कार भयो दुरग मत भयो ईडा मा भलो क ॥१३॥ १३॥ १३॥ १३॥
॥ वापी कुप तय गधि वि विस्तं धे वयो ॥ यात्री याने वे वा हे व वस्त्रा लं कारा अधिरो ॥१००॥
सांति कं ठे की कं देव दयो स धिर सा यरां ॥ स्वस्व मि दर्शन मे त्रे वनि जे का क सं
त्रि हे ॥१०१॥ ग्रहे प्रे से सेवा यां कृष्या ते वी ज वा पते ॥ शुभे कर्म निरां धो व निग
मे व स भा सति ॥१०२॥

धर्मा ल भयो धर भयो स्या ल भयो वस्तु लं उनु भयो वडि दि भयो ईडा ने ह्वस लं दि
व्य ने ह्वस भयो ॥१००॥ सांति कर्म भयो पुष्प कर्म भयो ओषति भयो आ पूरा स्वा मि को द
संत भयो मि त्या रि ला ह्व भयो वे पा र गनु भयो स वरी संग ह्व गनु भयो ॥१०१॥ ग्रहे प्रे से
गनु भयो से वा गनु भयो जे ति गनु भयो अंत वे वनु भयो शुभ कर्म क हि पनु भयो ई ति ला हि
वंदु शुभ क ॥१०२॥

वि आ रं भा दि का र्ये वृ थां ध वा ना व दर्शन जल मे क्षे व धर्मे व दि द्या दि पं व सा
धने ॥१०३॥ काल की शून श्रे व वत के द गि हा ग मे कला व्या धी वि कि ल्या यां सा
मि सं वो धने तथा ॥१०४॥ गजा खारे हने ध वि म सा खा सं वं धने ॥ परा या का र
रो वे व वि धी न स्या ये ते तथा ॥ गित वा आ दिन प्रा द गित सा स्त्र वि वा रो ॥१०५॥
वि आ रं म सा भा ई वं पु सित मि ल सा व धु रा कु हा ह्व धर्म मं त्र दि नु मंत्र सा धनु का
ल वि वा र वो पा ला ला ह्व ॥१०३॥ रो जि प्या ई प्र प्रा सा मि संग वा त गनु भयो ॥१०४॥
हा ति घो डा स का रि कु वा धनु परो प का र गनु धन क मा ह्व भयो गित गा ह्व भयो वा
जा वा जा ह्व भयो ना वनु भयो सा स्त्र वि वा र गनु भयो स ह्व र गा ह्व प्रे से गनु भयो राज
ला ई ति ला सा मा रा जनु भयो ॥१०६॥ ॥१०६॥ ॥१०६॥ ॥१०६॥
अ र्णी ना व वि धे दे व ज्व लि ते म द्र ते वि वा ॥ सज ते स्या मि सं वं धे ध्या मा दि द्या सा सं
ग हे ॥१०७॥ रि रां द दि भु जा यां त ह्व रा ग मने तथा ॥ ग्रह पु डा व वि धा दि नां वा र नं व व
प रा नने ॥१०८॥ ई डा र्णी मि दि दं चो कं यो ग म्पा रा दि कर्म व ॥ तत्रा की व ज य स वा यु ते ज
श्वा का म मे व व ॥१०९॥
दु जाला ई दे व भु भयो वि ध वि वा र गनु भयो आ पूरा स ज न भयो सा मि भयो ई ति संग मि लनु भ
यो अंत ला ह्व भयो दा ह्व स गनु भयो ॥१०१॥ रि ला ई ति गनु र गनु भयो व र्णी

विवाह भयो गुह्यपुजा भयो योगाभ्यास गर्नु भयो हे वरामने इति वंद्य भद्र ॥१०८॥

वंदरागिमा अग्नी तवर उ का सतत वजीत गर्नु ॥१०९॥ १०९ १०९ १०९

सर्वकार्ये निमित्तं अंति दिवा रात्र गता न्यायि ॥ सर्वेषु सुभका ठेपु वंद्य वा एव

सह्योते ॥११०॥ अथापि गुला कथं न कुरु विज्ञानं पठनं पाठन तथा स्रि संग

यत्ना गमने मलिनो कादिरो हने ॥१११॥ अथ कार्ये सहापातो विरसं ब्राह्मण

सनं विह्वले च सदा दिविष्य दायी ववेत्तं ॥११२॥ ॥ ११२ ११२ ११२

यत्प्रकाशनाडी विवाहोत्साहिन पति रात्रि पतियै के हं पुर्ण शुभ कर्म वंद्य माउत मद्र

अवशु चै नाडि मद्र क कानि कु विज्ञापनं भयो पुरुष भयो वासा गमन जा हा जमा व

सुभ भयो ॥११३॥ अथ कर्म मद्र पाना वर साधन गर्नु भयो जवर जस्ती भयो मृत कलुटनु भयो

सा स्रभ्या से वग मने मगया पल विक्रये ॥ स्रभ्या का हा दिपा स्र द ते अ र्चन दावे ॥११४॥

गते भ्या से यं व्रमं व द्रुग वर्व तारे ह्यो अ ते के ये ग जा सा सा दी रथा सा धन वा हना ॥११५॥

वा प मे मार न चो रे व द्रु सि दि कसा धने ॥ ये से नि ये से वे ता ला विष भुता दि मि मि ह

॥११६॥ हो रे व मद्रि वा दिना ग जा हा ना हते तथा ॥ नदि जलो य तर तो भे जे ली ली

लो ज नगा ॥११७॥

पथर भयो ये तिला दिका हनु ॥११८॥ वना हनु भयो भु म्मा को मंत्र त व विवाह गर्नु भयो

वडा पर्वत मा वरनु भयो ज वा जो रि हा ती चो डार थ मना र्यो सा र विवाह गर्नु भयो

का सा धना भयो ॥११९॥ ये भे किं ता रे वे ता ल भु त प्रे सा धनु ग द हा उ ह हा ति चो ड व हनु

भयो ॥१२०॥ ता दि तनु भौ धा दि भयो पु ष क ले भनु भयो ॥१२१॥ ॥१२१॥ ॥१२१॥

मा रो मो लो ती भे टो चो मु चो टने व से व राणा कर्ष रो श्मे भे दा न व के ये वि क्र ये

॥१२२॥ ख ऊ ह ले वै रि यो दु भो गे वारा न द ह्यो भो ज हा न म वा हा रे कू दि प्रे र वि भु मं

॥१२३॥ भु क मा व व म द्रु भो ह्मि रां व स्या क र्म नी ॥ रा ये नं भ्र यो वा रे व क र्ति कं सर्व

दा पु चै ॥१२४॥ कुरा नि सर्व कर्मा शा वरा नि वि वि धा नि व ता नि सि द्धा ति शु च्ये नः

ना व का र्ये वि व रा ण ॥२०॥ मार सा मे ह न सं भन दे ध न उ व वा न न द ता प हा

उ न स द्रु व स्य गर्नु ना स गर्नु दि वा को रु ॥१२५॥ हा त मा ल कू ति वो रि सि जा नु भो ज

न ग र्नु क्ता न गर्नु ज्ञा न गर्नु वा व हा र गर्नु इ ति कुरा क र्म गर्नु जो क र्म यो स्र भद्र भो ज

न ग र्नु दी वं द्र भो ज न ग र्नु वि ति के स र्यो कि रे स्त्री व स्य ह द्रु जे ना डि ले पु तनु

॥१२६॥ संपु र्ण कुरा क र्म गर्नु जो क र्म संपु र्ण शु र्ज मा सि दि हु न क ॥२०॥ २०॥ ॥२०॥

अथ सुस्मरण ॥ धनं वा मे क्ष रां दक्ष पदा व ह ति मा रू त ॥ सु स्म रा ना सा च वि श्वा सर्व का

र्य ह रा म्प ता ॥१२७॥ त स्मा ना ना र्थी ता व द्धि र्ज तं तं कालं सु पी नं ॥ पु ष वं तं वि ज्ञा

अनादि विंशं सं सं धिनी रा हा हा नि रा कुला ॥ परे लको वि लि म हा सा सं
 ध्या नं धि ह वे तो ॥ ३३ ॥ न सं ध्या सं धि नि ता डि सं ध्या सं धि नि ग य ते ॥
 वि भु व त सं धि ग प्रा रा सा सं ध्या न धि ह वे तो ॥ ३३ ॥ ॥ इ ति श्री लो को जि सा ल
 र्णा दे न व प्र का वि तृ प व न धि जे ना डि भे दो प्र थ मे ॥ १ ॥ श्री दे वो वा व
 रा न ना डि क र तो ह भ न्या आ रा डि क री त म ह सं धि क री रा ह र ह नि रा कु ल ह पा
 म ह श्री र ह स र न ना ते ते पै रा डि का र ले नि न हं ह सा धे आ सा धे व नि ह ॥ ३२ ॥ श्री
 दे व दे वा वः दे व दे व मा हा दे व सर्व सं ता रा ता का स्थि तं त दि य ह द ये र ह से व द
 मे प्र भोः ई श्री र दे वा व ॥ स र ज्ञान र ह से तु न किं वि दि ह दे व ता ॥ स र ज्ञाने र तो
 यो जि स यो जि का मो म त ॥ ३५ ॥ पं च तत्वा इ वे स हि स ते त हं वि ति ये ते ॥ पं
 च तत्वं प रं तत्वं तत्वं तत्वा नि रं त रं ॥ ३६ ॥ तत्वा नां ना म वि म्ना य सि धि यो जे
 न यो जि रां ॥ भ ज्ञानं दु वि हा नि ज पं ति पि स सं त म ॥ ३७ ॥ ३७ ॥ ३७ ॥
 अथ त्व नि मं य क न श्री वा र्ति ति ले विं ति ग र्हे र हे ई स र का ई स र मि र स को
 यो सं सा र दे वी वा र्ति ह न्या ती मा ह द ये मा र्णी र सा को र ह स ज्ञान जो ह सो म्ना
 ई आ ज्ञा ग र्नु ह र ॥ १ ॥ श्री म हा दे व ले आ ज्ञा ग र्नु ह र पा वं ति स र ज्ञान दे वी श्री ह
 आ पु र्ण ई स दे व त प नि दे न स र ज्ञान क न ज्ञा न्या यो जि जो ह तो जो जि मे रा भ र्ति क
 ॥ ३५ ॥ पा वे त र ते श्री श्री भ या को त र त रै मा लि न हं ह पा व त र दे वि प र म त र
 हं ते रै ला ई नि रं ज न भं नु ॥ ३६ ॥ यो जि ज न क न सि धि दि न्ना त व क न ना ज न हं ह
 त रै ज्ञां ना ले स वे प्रा नि का वे र ज्ञा नि ह ॥ ३७ ॥ ॥ ३७ ॥ ॥ ३७ ॥ ॥ ३७ ॥
 प्रो वा म ध त श्वं द्रो द द म ध प ह त र वि ॥ पु र्ण दि क री वे का धां भा त को र
 सि के स द ॥ ३८ ॥ प धि ध्या प स था ते जो वा य रा का स मे व न ॥ पं च भ त्मा
 त्म कं स र्वं यो जा ति स र्व क ३८ स र्व लो क य जि वा नां न दे र मि त त त
 क र भु लो का म र्ण्य प्र यो तं रा दि भे द पि थ र्प पी थ क ॥ ४० ॥ न जे वां द
 द से रो वा पी डि आ जं व कि र्ति तं अ स श्वा त र्वा वि ज्ञा ने श्च रा व द म्ना मि ह
 वा मा ति र र उ ध्यो ति र व ल्मा को वं द द हि ना ति र प र्श्वी म ती र की या को
 स र्वे जो ह सो पु र्ण भ क्ति भ नि ते रै ला ई भ ति न ह ॥ ३८ ॥ प धि विं ज ल ते न वा य
 अ का स पं च भ त ले स र्प र व न्ना को ह भ नि जो जा न ह स लो क सा पु म्ना मा न ग र्नु
 ॥ ३८ ॥ सं पु र्ण लो क का जि व म्ना त र भि नै ह भु लो क दे म्नी म त्ते लो क प र्यं तु ना डि
 का भे र नि रा न्ने रा हं ॥ ४० ॥ वं द भ यो वा भु र्ज भ यो वां व त र सा धे मा व ह क आ

४ प्र का र त र भे द क हं ह स न ॥ ४१ ॥

प्र थ मे त र स र्वा यां दि ति यै मा धि सं धि ॥ त ति यं या वि हा ति व र्ण

मोह सं मधु रंखा दं कला मं जल मेव व॥ आ वि रुं ते जती ते स शका स कुरु
कं तया ॥ ५४ ॥ अक्षं गुलं वहे दाय ल नल वतुं रं गुलं दं दं गुल मा हं यं
जे उतां गुल मा हं ॥ ५५ ॥ ७६ म तु भं रं ला ति ती र्य गु बा नं तया ॥ अक्षे सं
म वि जा नि याः व मे स र्व त्र म ये मा ॥ ५६ ॥

पथि को मधु रंखा दं कल को मि ठे सा दं क जल को मि ठे सा दं क अति
को ति ता सा दं क वा यु को अमिलो सा दं क अका स को की रो सा दं क ॥ ५४ ॥ वा यत
ल आ ७ अं गुल कं वा र अं गुल अति तल क वा रु अं गुल पथि तल क सो रु अं गु
ल नल तल क ॥ ५५ ॥ ७७ भो व ल न म म तु ग र्द र प्यो व ल न म तां ति ग र्द र रं ठे वा व
ल न ल ले ७ बा ७ न ग र्द र म ये ले पु र्ग ग र्द र म म न ले व र्जित ॥ ५६ ॥ ॥ ५६ ॥ ५६ ॥
पथि म स थि र क र्मा ति वं व ले वा रु हो न व ॥ ते न ति स म क र्मा नि मा वृ ता
बा न ले ॥ ५७ ॥ को ति न की वी क र्ता वं यो म स यो ग मे व या त ॥ स न्य ता स र्का
ये न ना त्र का ये वी वा रा ना त ॥ ५८ ॥ पथि ज ला भ्यां मि धि स्था म पु व र्हे शे
यो मि ले ॥ न भ स नि स्फ लं स र्वं ज्ञा त वं त ल वे दि मि ॥ ५९ ॥ वि र्हा भो मि
ति ज्ञा यो त स्ते ता त्रो म त स त ल ति स्था द रु का ता भं न भ स नि स्फ लं भ वे त ॥ ६० ॥
स्थि र का ये ला ई पथि तल ति नु वा डो ला ई ज ल त ल ति नु अ स क र्मा ला ई अ मि
त ल ति नुः स भ क र्मा ला ई ते ज त ल ति नु ७ बा ७ न ला ई वा य त ल ति नु ॥ ५७ ॥ यो ग
भं स म आ अ का स त ल ति नुं स न्य ना ति मा स र्व का ये व र्जित ॥ ५८ ॥ वं द्र पथि
वि मि धि दा ता द अति वा य भ ये ग र्मा द अ का स त ल त र्व नि स्फ ल द ॥ ५९ ॥
पु ल उ द त पथि त ल ति लो क ज ल त ल वा डो द अति न ति द अ का स त ल त र्व
नि स्फ ल द ॥ ६० ॥ पति रा मे म ये वा ही ह नु या ग रु र प्य तं ॥ क वो २ मा पा थि वो वा यु
गु लं वा यु स आ प म भ क र्मा क त ॥ ६१ ॥ आ र्त्त रं त श्व स्तु त श्व वा ना ने स त लं गुलं ७
यो वा ल ये कुरु ते क र्मा का रि ते ज ला ॥ ६२ ॥ ॥ ६३ ॥ ॥ ६३ ॥
पहे लो ठि लो म ये मा ह न्या ॥ स भ १५ स र्व दा सु नि न्या यो र ग र्मा मा ह न्या पथि तल हो
मे स्क र्मा मि र क र्मा ज नु ॥ ६१ ॥ ते र्हा ७ यो व ल न्या भा ति ज ती ७ अ स र्द अं गुल ज ल
त ल हो शु क र्मा ला ई प डी या द ॥ ६२ ॥ रा तो त को ता ७ भो व ल न्या स मि वा र अं गुल अति
त ल हो क र क र्मा क न ग र्मा हो ॥ ६३ ॥ ॥ ६३ ॥ ॥ ६३ ॥

कृष्ण सित कृष्ण वशी स्ती मं गा मी वा सं गुल ॥ वा यु प व न मं जे मं वा र क र्मा मि धि दा ॥ ६४ ॥
र स मि र स म स र्व त ल गु शा व ह ॥ अ व रं तं वि जा नि यो मि नां यो ग द ये क ॥ ६५ ॥
तथा वं पी तं व त को शां मधु रं म ये मा भि तं ॥ भो गं पा थि वं त लं व पा हे म र्मा मं ॥ ६६ ॥

कृष्णसितकृष्णवर्णः स्त्रीयां गङ्गायां वा सांगुल ॥ वायुपवनसंज्ञेयं वा रक्तामृदिदिदि ॥ ६४ ॥
 रसजिरसमसर्वतल्लगुणावह ॥ अवहंतं विजानि योगिनां योगदोयेक ॥ ६५ ॥
 तथा वं पीतं वतु कोशां मधुरं मध्वे माश्रितं ॥ भोगं पापिर्वतं प्रवाहे द्वा दसं गुलं ॥ ६६ ॥
 फालो वा डलो देडो बल्लो हंडि गर्भि मया को आह अंगुल मया का वायुतल्लो वा रक्तामृदिदिदि
 सिद्धि कुजौ न तल्लमा सर्व रस छ सर्व गुण छ मया योगिकन अमर दिन्मा कर्म जांनु ॥ ६४ ॥ तथा
 वं पहे तो वाकुन्या मधुर स्वाद हो हंडि अंगुल मया को पथितल्लो ॥ ६५ ॥ जो योगिल्ले सर्व
 तल्ल स मरस गणधुज द छ हो यो ॥ जि योग यता हो ले तो अहं वं द ज हो क या ये को
 स्वाद हो हंडि अंगुल मया को लाभ कन गन्गी यो जल तल्लो ॥ ६६ ॥ ६६ ॥ ६६ ॥ ६६ ॥ ६६ ॥
 श्रेत मध्वे दुःखा काटे स्वाद काय मोदकं का मधु पातु सां तल्ल प्रवाहे को इत गुलं
 ॥ ६७ ॥ रक्तामृदि को सां ते के स्वादुर्ध्व माजि प्रवाह कं ॥ दिष्टे वा ते न सं तल्ल प्रवाहे
 वतु र गुलं ॥ ६८ ॥
 रा तो त्रिकोशां ति रो स्वाद मया को ७ मो बल्ल न्या वा र अंगुल अश्रित तल्ल ॥ ६९ ॥
 निलंब वर्तुला काटं स्वाद मति यगाश्रितं ॥ वपलं माहंतं तल्ल प्रवाहे हंडि गुल मत्तं
 ॥ ७० ॥ वर्ण काटं स्वादुर्ध्व अयो हंडि सर्व गाश्रितं ॥ मोक्षेल अते तल्ल लकी मर्
 पुनि हल्लं ॥ ७० ॥ पथि जलेशु मे तल्लं ते जो मिश्र पलो दय ॥ हा नि मत्पु करे पुं
 सां मधु ओयो ममाह त ॥ ७१ ॥ अपु वे पथि म पथिते ज श्वर र्ही तं तथा ॥
 वायुश्चो तं रो दिजो यो मये को रोगतं सा म ॥ ७२ ॥
 मलो वा डलो अमिलो देडो बल्ल न्या जल दि साह अंगुल वायु तल्लो ॥ ७३ ॥
 सर्व रंग मया को सर्व स्वाद मया को र्ही हो अनु न हन्या ल र्व गा मि मोक्षे
 फाल कन दिन्मा ल र्व का र्थ कन निहल्ल गन्गी अको स तल्लो ॥ ७० ॥ ७० ॥ ७० ॥
 पथितल्ल जल तल्ल शुभ हंडि अहं सं पूर्ण तल्ल मा मा न्दी हत ॥ ७१ ॥ अवस्था कहं हंडि ल र्व
 ह पथि पश्चीम हते ज द्भीता हंडि त र वायु ह मध्वे मा अका स तल्ल ॥ ७२ ॥ ॥ ७२ ॥
 वंद्रे पथि वीजले मा तां शु र्थे वाग्नी यदा भवे त तदा सिद्धि न सं देह त्यो मया मोक्षे
 पु क र्म सु ॥ ७३ ॥ लाभ पथि कृते हि मा तिसां सां लाभ हंडि जलो ॥ वही मत्पु शि
 ति वायु न मत्पु र्थ द हे क वित ॥ ७४ ॥ जिवित तौ ज ये लाभ कु म्मा वधनु क व न्या ॥ ७५ ॥
 वीर्ये पुष्टे प्रशे व ग म ना ग म ने तथा ॥ ७५ ॥ आयाही वरु तो तले तल्ल यो विभु मं र्ही तो
 प्रम या ति वायु तो ने व हा मत्पु व मल्लो ॥ ७६ ॥

अका सतत्मा है ना कि प्रको वं ३ तल विवारि य से मंनु ईति वा इतल का पहि का ट्वा
तं य त्वा हि वि व र ग नु ॥ ८४ ॥ पुर्व पश्ची म ड त र ग म न म दी प धित ल मा प्रा सि ज न ल
ई व डी का द्द ॥ ८५ ॥ प धित ल ज ल ते ड ड का स ई वि पा व त ल ने वं न ल प धि ल ल

अकासतमसहैनाके अको वं ३ तल विवारि यसे मंनु ईति वा इतल का परि का टला
 तं य तृगति वि वर गनु ॥ ८४ ॥ पुर्वे पश्ची म उ त्र ग म न ग दी प थित ल सा प्रा शि ज न ला
 ई व डी या द ॥ ८५ ॥ प थित ल ज ल ते ड अ का स ई ति पां व त ल ले मं पु रा प्रा शि व न का क ह
 ॥ ८६ ॥ अ थि मं स ल व न ना डि ते मं वे व नु पं मं ॥ प थि वं व गु तां को कृ व स ज्ञाने
 न भि धि तं ॥ ८७ ॥ शु क्रो ति त म ज्ञा व गु त्र ल लं व पं व म ॥ अ व पं व गु तां को कृ
 व स ज्ञाने न भि धि तं ॥ ८८ ॥ शु ध्या ति जी धा निं द्र को ति त काल ले मे व व ते ज
 पं व गु तां को कृ व स ज्ञाने न भि धि तं ॥ ८९ ॥ पां ध नं ग त नं गं रं को व नं प्रा
 का र तां वा गु पं व गु तां को कृ व स ज्ञाने न भि धि तं ॥ ९० ॥ त ग दे ष त धा ल ज्ञा म
 य मो हो व पं व म ॥ न भ पं व गु तां को कृ व स ज्ञाने न भि धि तं ॥ ९१ ॥ ९१ ॥
 हा उ म्मा त न स हे दं ला ३ पां व प थि त ल ले प्र का स द्वां व त ल को प थि द्वा म नि
 प्र स ज्ञान म भ न्ना को द ॥ ९२ ॥ अ ग पि म्मा ता मि दा अ ल खे ते ज त ल को गु ता म नि
 प्र स ज्ञान म भ न्ना को द ॥ ९३ ॥ त ग दे ष त धा ल ज्ञा म य मो हो व पं व गु तां को कृ
 म नि प्र स ज्ञान म भ न्ना को द ॥ ९४ ॥ ० ॥ ० ॥

प थि प र पं व ल व ल्या रि स द य स था ॥ ते उ खी स डि ज्ञा ति या द य
 पिं स ति त न म ॥ ९५ ॥ पा थि वे व र काले व ला अ क्षा ये ठो रा प्र वे त ॥ ग
 ये ते पा ता ड तं लि छे मे नै न व र य त ॥ ९६ ॥ प थि पं व अ पं व गु तां को कृ व
 स त ॥ न भ ये क गु तां वे व त ल ज्ञा न मि द्वां वे त ॥ ९७ ॥ प र का र को प्र स वि
 वा र यो ति त था ध र द द ति ल र्व का र्थे लु ड व र य ल द्वां व लं ॥ ९८ ॥ ॥
 प थि का प व ल ग ग द ज ल का वा रि स ग न क् अ थि का ति न गु ता द ॥ ९९ ॥ प थि पा
 व भा ग द्वा ज ल व र भा ग द्वा अ ग ति ति न भा ग द्वा य द्वा भा ग द्वा भि न्ना नी ज न ले डो
 व ॥ १०० ॥ आ प्ता २ गु ता को ति वा र ग नुं ज लो प्र का ले प थि आ प्ते पु र द्वा त लो ता
 ले स वे मं वि वा र य व नु ॥ १०१ ॥
 ध ने म्मा हे दि नि डो म्मा पु रा धा अ व र तां तथा अ भि नि डी ह र वा हा प थि त ल म्मा
 ह तं ॥ १०२ ॥ प र्वा का हा स था स्ते म्मा आ वं व रो दि नि डी म्मा ड प दो
 मे न त ल म्मा मि डी ये ॥ १०३ ॥ अ र नि फा कि का ति मे म्मा पु र्वा व का ल गु ता
 पु र्वा भा ड प द्वा हा ति जे त ल मि ति म्मा ॥ १०४ ॥ वि र्वा यो व र का ल गु ता
 स था वि वा पु न र्वा अ भि नि म्मा ति मे व वा र ता ल म्मा ह तं ॥ १०५ ॥ ॥

अने सुते दिनि जे हा अनुता धा श्रुन भाजि नीत ७ त तप हा पवि तव साद ॥
॥ ६५ ॥ पुनरुता अने धा मल भादने वति ७ त रा भाद सत जिज नल तव साद ॥
॥ ६६ ॥ अहम त्ति का तिजे मला पुर्व फल गुनी ७ व भद्र सा भक्ति तव साद ॥ ६७ ॥
विता ७ त र प र गु ति हस्त विन पु न र व र अहम नि मृ ग ति ह चे सि वि

वहीना ५ स्थिो हतो वतृ छति शुभा शुभ ॥ तत्सर्व च मिमायीती शुभ शुभ न
मंश ॥ २०० ॥ तत्वे रामे जया पार्श्व सुतत्वे च धनं जय ॥ को एवारी हता सर्वे वृद्धे तत्वे
विपर्यय ॥ १ ॥ जन्मांती यं संको रात्पु सा द व ध वांगु रे ॥ के वी ची ज्ञा यते तत्वे
वासना विमलात्मनी ॥ २ ॥ अथ च तत्त्व ध्यान ॥ लं विजं ध री ध्या य तु वृ ७
आ सु शी त भा ॥ सु गंधं स्वरा वि ए ति मा रोग प द ह ना ध म ॥ ३ ॥
जिवना ५ मा आ ५ को हि प्र ह म ग रो ह व ठि या द शु भ शु भे ॥ २०० ॥ तत्वे ल राम जी ले रा व रा मा
ना पा च पां ५ व ले को ए य क न व धि ग न्या ॥ १ ॥ जन्म ति का स स्का जे गु रू का प्र ता प ले त त्व ज्ञान
पा र्श्वी मे ला त्मा मा प्रा प्र ह ॥ २ ॥ अथ च तत्त्व को ॥ लं य स्म त्रै ल पृ थ्वी को ध्या न ग र्नु चा प्रा
त्पा पित व रा ज्ञो त त्व ॥ सी उ स म ॥ ३ ॥
बं वी जी व रू ध्या यं त्रिकोणा ॥ ६६ ॥ चंद्र शि प्र भ ॥ शु धा त वा दि स हि ह म त्वे ज न म ध्य
च मं ज न ४ ए वि जी ति वि न ध्या यं त्री को णा मा ह तः प्र भ ॥ च ह न यो न भ क्ति त्व मा न या
गि न स हि स्तु ता प य वि ज्ञा प व न ध्या य द र्ति लं श पा म ल प्र भ ॥ आ क्य संग म ना यां च पा र्श्वी व
७ म नं त था ॥ ६ ॥ ए वि ज्ञा ग म नं ध्या य नी ए वा ए व रु प्र भ ॥ ज्ञानं त्री का ल वि व मे र्प्य श्रु य म
ती मा दि क ॥ ७ ॥

वयो मत्र ले ६ ह रा को ध्या व ग र्नु से तो अ र्चि चंद्र ज सो भा ग रू वा स ह न स क न्या ज न त त्व ॥ ४ ॥ ए यो
मं व ले अग्नि को ध्या यं न ग र्नु त कु न रा तो व र्ण व रु त अ न प च उ न्या अग्नि त त्व हो ॥ ५ ॥ व यो मं
त्र ले प व न को ध्या न ग र्नु वा पु लो श पा म व र्ण भि या को म न क न चं च ल ग न्म वि य त त्व हो ॥ ६ ॥ ए यो
मं व ले आ का श को ध्या न ग र्नु नी ए वा आ वा च ट पा इ न्या त काल को अ नी मा दि ज्ञा न्या आ का श
त त्व हो ॥ ७ ॥

स्व ज्ञान न रो यं न धन ना स्ति त तः प ॥ गं म्प त स्म ज्ञा ने न अ ना या स फ ल ल भे त ॥ ८ ॥
इ ति श्री शि वा मा स म्या दो क्त न व प्र का र ण चि ना प व न वि ज्ञा यो त त्व व्या न क थ नी ति ती
य ण ॥ २ ॥ अथ यु ड वि ज्ञा य ॥ दे व या च ॥ दे व दे वं म हा दे व म हा ज्ञान स्वे रा य ॥ श्री
का ले वि यं चै व क थं भ व ति स क ॥ ९ ॥

इति श्रीशिवामासम्पादोक्तनवप्रकारणाचनपवनविज्ञातत्वज्ञानकथनीकृत

यगुणां ॥ २ ॥ अथयुद्धविज्ञा ॥ देवुवाच ॥ देवदेवमहादेवमहाज्ञानस्वरोय ॥ श्री

कालेविवेचैव कथं भवति सका ॥ ८ ॥

स्वरज्ञानेदेवि अहज्ञानेदे पुर्णद्विजवदतपनी वीनातत्वसिद्धदेन सूर्येनाडीचइनाज्ञानाज्ञागी
कन काष्ठफलहृद ॥ ८ ॥ इति बोधा ॥ २ ॥ श्रीमहादेवप्रतिपार्वतिविनीगर्दनदेप्रमो स्वाज्ञा
नजी घ यकोत कालविषेजोद स्वकोन २ हे आज्ञागर्नुहवस भनी यितिगदभिया ॥ ८ ॥

इवा उवाच ॥ अथकालज्ञयपदन ॥ अभाभमिति श्रीधा ॥ वतदी कालविज्ञानं
नाम्न भवति सुदृष्टि ॥ १० ॥ तत्वे अभाभं कार्ये तत्वे ज्ञय पण्य ॥ तत्वे समर्थमिदं
तत्वे विपा सुव्यते ॥ ११ ॥ देवुवाच ॥ देवदेवमहादेव सर्वसंस्कारसागरे ॥ कीनराणी
पांसीव सर्वकार्यमिदं ॥ १२ ॥

हेदेवि तिमीनेवठिया भयो अथको ज्ञये भयो अभाभम विचागर्नुयो श्री काल विषय १० ॥
हे सुदृष्टित्वने गरि अभाभम सुदृष्ट तत्त्वने पण्य सुदृष्ट तत्त्वने सामर्थ्ये सुदृष्ट तत्त्वने कालविषे
ज्ञाना पनी सुदृष्ट ॥ ११ ॥ फेरि पार्वती वीती गर्दन २ प्रमो मनुष्यत्वाद् सर्वकार्ये सधिन गनु कोन
मीवद भनी वीती गर्द महादेव आज्ञा गर्दन ॥ १२ ॥

श्रीशिव उवाच ॥ प्राणादेव नमिन् प्राणात्त्वपरां सरवा ॥ प्राणात्त्वपरेर्वधुनस्ति
नास्ति वानरो ॥ १३ ॥ श्रीदेवुवाच ॥ कथं प्राणास्थितो वायुदेहे विप्राण रूपक ॥
तत्वे सुशं चोर प्राणा ज्ञायते यो गिभिकथं ॥ १४ ॥

श्रीमहादेवने आज्ञा भयो प्राणा जो द सगमि वदन् स माय भनुपनी प्राणौ दन् ॥ हेवरानने
प्राणात्त्वता भादतपनी देन ॥ १३ ॥ फेरि पार्वति विगदन् हृष्ट ॥ हेष्ट प्राणा वायु को
नतहले स्थित भया काद कोन तेस्को देहिद्यो जनहमले सोतत्व कोना तहले जी ददन् न
नी वीती गदा भया ॥ १४ ॥

श्रीशिव उवाच ॥ कः येन गामध्यस्थमासतो रक्षपालक ॥ प्रवेशदशभी प्राप्ता
नीर्गमेकाशांगुलं ॥ १५ ॥ गमरो तु चतुर्विंशो नेन वेदास्तुधावने ॥ मेधनं पंचवक्षि
च शतांगुले ॥ १६ ॥ वाचासिद्धि चतुर्धन उवाच

श्रीमहादेवने आज्ञा गर्दन कायान गामध्य वायुने र सागर्दन प्रवेशग ददिस भंगुल हृद ॥
कदावाह अंगुल हृद ॥ १५ ॥ हेदेवि स्वभावगटिकन प्राणा को गति वाह अंगुल हृद ॥ एक भ
गुल दण्ड उदा कवि प्राणा को अतिगती हृद ५५ अंगुल उदा जिव आ वंद का उद गिना

अंगुलघटा उंदाकविर्नहिंद ॥ १६ ॥ चार अंगुलघटा उंदा वाचा ॥
 लुपंचमे ॥ वळेत्वाकाशगमनं चंद्रवेगं च सप्तमे ॥ १७ ॥ अष्टमेशिदियचा दौ नवेमे
 नीधयो रवि ॥ दशमे दशमर्निश्च द्यायानां श्वद्वौ कके ॥ २० ॥ द्वादशे हृष्टा एव गंगा एत
 मती पिवेत ॥ ओनखाग्ने प्राणपाकमे
 सिद्धिहृंद पाच अंगुलघटा द्वादशहृंद अंगुलघटा आकाशसमान हृंद ॥ शत अंगुलघटा चंद्र
 वेगहृंद ॥ १८ ॥ आठ अंगुलघटा अष्टसिद्धि प्राप्तिहृंद जम अंगुलघटानवनीधि प्राप्तिहृंद दश अं
 गुलघटा अमृत प्राप्तिहृंद ॥ नवमा प्राणगयात द्वादशाष्ट देन ॥ २१ ॥
 भद्राच भोजनं ॥ २१ ॥ सर्वप्राणो विविधोक्ता सर्वकार्यफलप्रदा ॥ इत्यतः गुरुवाक्य
 न न विद्याशास्त्रकोदिनी ॥ २२ ॥ शयश्चन्द्रो विद्या यदि देवानलभ्यते ॥ मध्याह्न
 मयरात्र्याश्च परतस्तौ पवर्तते ॥ २३ ॥ पुण्ड्रेश्वरश्च समाप्तन दिवाकर ॥
 बस्ताप्रकाले प्राणो विधी ह्यसंपूर्ण कार्यको फलदाता ॥ गुरुवाक्यले वा डैज्ञान
 नाशास्त्रविवाचित यातकोटिगत्या पनी प्रातःकालमा चंद्रहस्तसायं सूर्यहस्तक्ष
 नमा क्वा रात्री मा क्वा बढि याद ॥ २४ ॥ द्वादश चंद्रमा भुजधस्तमि पयुद्ध सूर्य भुजधस्तो
 नादिमाजीविद्य स्वहि पाया अग्निगत्या सिद्धि ॥ श्रावीवाह महत्मा प्रवेस भयो
 संसृष्टी सुभकार्ये कन चंद्रमार चंद्रस्वरमा वळी याद ॥ २५ ॥ अयेन
 भयो तीर्था भयो दीन भयो ये समा भाना तत्त्वज्ञाने देवजोग युक्तमे
 वा सु पलोसु संपूर्ण सुकन जितोस ॥ २६ ॥ जस योगि हरले यस्तोत
 त्व जानी कन रसा भूमिमा गया सबै स नृहरु लाहा जे सक न्या हरे
 ॥ केहि विघ्न ह्याहेन ॥ २७ ॥ येना दिगत पाहेन सर्व सी विष
 जायते ॥ २८ ॥ या नारंभे विवाहे च प्रवेसन गरदिके ॥ सुभका
 र्येषु सर्वेषु चंद्रवार प्रशस्यते ॥ २५ ॥ अयनं तिथी वाहना
 साखि यन त्वं युके ॥ यदि वहती कदा चीन देव योगे न पुंसो
 ॥ २६ ॥ सजयती रोपु से मंस मावे स्वरे शा ॥ प्रवसती नच विघ्ने

कस वस्या पित्रो क ॥ २७ ॥ निरुद्धे जिवरक्षे जिवोगे परिधा यदा ॥ जि
 वो जायति यो मुद्धे जिवो जसति मे दिने ॥ २८ ॥ भुजे जले व क ती वां रा वरां
 लां ति कर्षत ॥ वहे वा शुभदिने शुभ पुनर्नो अयं वृषि ॥ २९ ॥ ति वेत्त स्याव
 ति न ति वेत्त

॥२६॥ स जयता रा पु स न्य स मा व स्व र शा ॥ प्र व न ना म च वि द्यु

क स व स्या प लो क ॥२७॥ नि व र भे नि व र भे नि व र भे परि धा य व ॥ जि
वो जा य ति यो य द्ने जि वो ज स ति मे दि नो ॥२८॥ भु मे ज ले व क की कां रा व र्णा
सां ति क र्म ॥ व हो वा य त्र दि प्रे सु यः पु न नी अ य क्क पि ॥२९॥ जि ने न्ना स्र व
वि या जि ने नै व र्क का स ये जि ने न प्र क्षि पे स्व द् ॥ शु द्दे ज य ति स व र्णी ॥३०॥
यो लो स्व त्को वि वा र ग रि रु न्ना यो गिला ई दि न व ले प नि स रि र ले प नि आ क्क स ले प नि
प धी ले प नि ॥ रा भु नि प्रि मा त न यो गि को जि व र ॥ २१ ॥ रा स र्ध सां ति
क र्म ला ई ज ल त त प र्धी त त्वा भु य द् अ ह वा य त त्वा अ ग्नि त त्वा अ स भ क र्म ला ई अ
लो क्क ॥२२॥ जे न ना डि मा जि व द् ख र्हि हा त ले सा क्क लि नु द्वा रा व ठ नु य द्वा
जा नु सं प्र णा सि द्दि ह्ं द्वा ॥ २० ॥

आ क्क वा प्र ता प व नं स मा रै हे त वा ह नं ॥ रा भु तै रे प रं द मा त स र्व का र्थे
नि सा ध ये त ॥३१॥ अ प र्वा स त्रु तां म त्पु प रा प व स र व ले त था ॥ कु रू त पु र्ण
त ल त्पो ज ये ते का व संध रा ॥३२॥ यं ना डि व र ते वां गं त ले वा धि वे द व ता ॥ स
मु र्ना भु ता ते वां स र्व का र्थे क ल प्र द ॥३३॥ आ दो तु क्क ये ते म स ये श्व दु ह्ं
स मा वे र त स र्वे मु द्वा कृ ता ये न ते वां सि द्दि न जा ये ते ॥३४॥ ३४ ॥ ३४ ॥
मु ने ना डि स त्रु द् जि वा ना डि आ क्क व ल द् सं प्र णा क र्म पु र्वा आं ग मा ग र्नु ॥३५॥ ३५ ॥
जे न ना डि मा जि व द् ते ल मा अ वि दे व द् त म धी नि वे पे र आ धि ग र्नु सं प्र णा क ल प्र
पु ह्ं द्वा ॥३२॥ प ह्ति मं द्रा ग र्नु व द्दि य द्वा जा नु स र्वे मं द्रा जो जा नो म स र्व का
म सि द्दि ह्ं व स ॥३३॥ वं द्र मा वा स र्थे ह्ं व र ते ल स म ये मा वे र आ व स र त ल
ना डि मा शु ने ना डि दि नु ॥३४॥ ३४ ॥ वं द्र वा ह न्ना थं तु र्क प्र वा हि म य मा मा
यां नि व यो कु का मा ॥ स रि रा स्र वि द्वा प्र ति ता द्वा शु ने त वा मं प्र ति काल ई द्वा
॥३५॥ या द्वां व व हे त वा य य द्दं त दि लि अ ये त न द्वा ते व न सं दे ह्ं जं अं ते त
ल को की ये दि वि ग त ॥३६॥ जो न आं ग मा वा अ पि दि ने दि सा मा य द्वा म र्ग जा
जा नु म श क्वा ई दि आ व स त कानि जी तो म ॥३५॥ वं द्र ना डि प्र वा ह म य का व
प त मा य द्वा ग र्नु ई द्वा लो क्क त प नि हा र ह्ं द्वा ॥३६॥ ३६ ॥ ३६ ॥ ३६ ॥ ३६ ॥
म र्ना म व हे व म स दं ग प्र ता मे व व ॥ अ क्क म र्दे क र्ण म ज ये ते व पु रं द ॥३७॥
प्र दि प दे प्र हा रे भो पु र्ण ग यो मि र भे ते ॥ न त स रि प्र मि स कि व रि क्क र्णी ह्ं
ने ते ॥३८॥

अगस्त तर्जनी वस्य पादं गृहस्थथापयति ॥ मुकुटाद्यै रक्कतं च लक्ष्म

यो धातु यो भवेत् ॥ ३८ ॥ निम्नाकारे रेवारे मध्ये ये ते सप्ति रते ॥ स्थीतो रक्षो

निर्मिता निजं ये कश्चोत्तरा सदा ॥ ४० ॥

जोननाडिमा वा युक् सताडि प्राहुं हते सवेला मा कौ नै आवस इदु आयापनिजितोत् ॥ ३९ ॥

सात्त्रलाड न्यावेला मा निव अंग रश्मा गनु प्रकरे ले वल वात् सनु हवस पतिजितोत्

॥ ४० ॥ अंग गृ मा तर्जनि मध्ये मा को र पां दा गली अंग हा को स दु गहि युद्ध मा जा वस तल छे जो

धा जितोत् ॥ ४१ ॥ इडा ताडि को वरे वर मध्ये खर हत आनु गर्तु ॥ ४० ॥ ॥ ४० ॥ ४० ॥ ४० ॥ ॥

खास प्रवेस काले तु इतो जल्यं ति वां दितं ॥ तस्यार्थ सिद्धि मा या ति निर्ग मेने वसं दुरि ॥ ४१ ॥

लाभा दिव्यादि का येति निष्ठा नि किर्तिता मधि ॥ जिवो वशा त सिद्धि ति हा ति निर्ग मेने वसं दुरि ॥ ४१ ॥

॥ ४२ ॥ नरे दशास्त्र की या वशिष्ठ वा मा प्रस स्य ते ॥ कुं भ कं बुद्ध काले वन ये नाडि नून गति ॥ ४३ ॥

हकार स्य लका रस्य विगा मे द खर कथं ॥ सह सं स म ये देने यो ज येति व स र्व द ॥ ४४ ॥

खास प्रवेस काले मा को हु तले प्रवेस गहि युद्धे स सिद्ध निर्ग म वेला मा प्रदु ॥ ४५ ॥

॥ ४६ ॥ लाभ भला कुरा व मे जो ह्म नि को मारि भ्म जो ह्म ॥ जिव ताडि मा आदि युद्ध त स भद सभा

मा युद्ध त अशु भद ॥ ४७ ॥ प्रष को स ये नाडि भलो ह्म का वा ड नाडि वं द भलो ह्म युद्ध का

ल मा विना ह्म कार ले खर ले मे दे दे ना ॥ ४८ ॥ हं स पद जो ह्म ति व सदा स र्व द आ प्ने ह्म ॥ ४९ ॥ ॥

शुन्यो गं परत कला प्रिया ग गो मय जज ये ॥ जिवां जे चा त मा प्रो ति ह्म मं जे र से त स

दा ॥ ४९ ॥ वा मे वा ये दि वा २२ म ये दि प द्वा त प द्वा क ॥ प्रो ति चा ते न जा मे ते शु न्म चा तं वि

निद मे त ॥ ४९ ॥ अत ले नो त रे चा त प्राप्थन गुजा भवेत् ॥ ५० ॥

व वा युना ॥ ४९ ॥ मि र्म को म त ले न शा त को चा त मि र्म ये ये वं वं वि को द ति ख र ता ले पु

शु ने अंग आ गाडु गहि जिव को र भा गनु जिव भ ग अदि भ मा म तु ग कं त र्म शु न्म अंग अ

दि गनु ॥ ४९ ॥ वा दा नि नु वा वं ड भ यो प्र क्त गो स पु री अंग सि द्ध ह्म अन्ध आदि युद्ध वी वा

र गहि क ह्म ॥ ४९ ॥ जल तल मा पा ड या आ ह्म पथी तल मा को द र मा ह्म अदि न ल कु म मा मा

ह्म वा यु तल ह्म भ मा त मा ह्म ॥ ४९ ॥ अ का स तल ह्म भ मा त मा ह्म ये स्य का ह्म ले चा त को वि

॥ ४९ ॥ पां व प र्मि का चा त को ख र सा त्र ले का ला को ॥ ४९ ॥ ॥ ४९ ॥ ॥ ४९ ॥

युद्धे अदि कृ ते प्र मे ग र्म प्र म तो ड ये ॥ रि से ये व दि ति या र्म अदि भ व ति नो न्म द्या ॥ ४९ ॥

प र्म नाडि ग ते प र्म शु न्म मं ग त द ग र्म ॥ यु नो र्मा ते कृ ते स नु वि अ ते ना व सं स ये ॥ ५० ॥ ॥

वा या वा रे स मं ना म य स्य त स्य ज ये भ वेत् ॥ ५० ॥ ॥ ५० ॥ ॥ ५० ॥

वह तो द क्षी तो भा गे वि ज ये वि ष म शेर प य द म् कृ ति स द्ध स्य त दा स र्था न मा दि से त ॥ ५० ॥

धो अ दा त श्रे य से त दा त मि दि त ग द ॥ ५० ॥ ५० ॥ ५० ॥ ५० ॥ ५० ॥ ५० ॥ ५० ॥ ५० ॥

वाया वा रे स जं ना म य ह्य तस्य ज्यो भवेत् ॥

पक्ष तो दक्षी तो भागे विजये विजय भोर पय दम दिति रदृश्य तदा स्थानमादिशेत् ॥ प
क्षे अदा तु शुभे से तदा जति हि विग्रह ॥ ५२ ॥ ५२ ॥ ५२ ॥ ५२ ॥ ५२ ॥ ५२ ॥ ५२ ॥ ५२ ॥ ५२ ॥
दुर्वे प्रक्षे मक्षे जि तला कि उक्षे जि तला भनि पुर्ण अंग तर्क भे पुक्षे त अगा डि वा क्य सिद्धि
ह पक्ष डि वा के अति हि क के श्रो अति हि क हनु ॥ ४९ ॥ पूर्ण अंग लु का इ भुवे अंग अदि गनु
अंग अंग तर्क वै र्णा या वोरि मर्दि ॥ ५० ॥ वाया स्या जक्षे ना उ लि द्धु जे को जये स्वप्
वंदु मा शुभे ताप आ ई प्रक्षे त विजय मर्दि जि तो म् ॥ ५१ ॥ नी के वल वंदे मा पुक्षे सा मिला प
वक्ष शुभे मा प्रक्षे त वंदे उ उ ह्व म् ॥ ५२ ॥

पार्थिव वस मं च कुंति हि हि हि य भव ॥ वाहर्तो उ छि हिते जसि भोग म् पु र्वा भेदि ॥ ५३ ॥
निमि ह क प मा द ह यदा ते जय ते निल ॥ पक्ष काले तदा कुर्या दुध ये ते न पु छि मा ॥ ५४ ॥
निश्च ला धार तां कृ पा पुष्प ह्ता नि पा तये त ॥ पूर्ण पुष्प पत न भुने वा च फलं लभे ॥ ५५ ॥
पक्षि तव मा पुक्षे त वरो वर उ ह्व ह्व म् जल तव मा पुक्षे त जक्षे अदि उ ह्व उ ह्व से के ना जि तले
ला वा य तव मा पुक्षे त पुन को भाग ले ता ॥ ५६ ॥ आ का य तव मा पुक्षे को ल स्फ म ह्व ले ता अग्नि
तव मा पुक्षे त वंदे पुन य दन पु छे ले ता ॥ ५७ ॥ पुक्ष का वेला मा ना डि का ज व न पा व ल द ह
तन गारि दु ई हा त मा पुष्प ला व व र्गु पुन मा ल ला व से वरी को फल फिली ते से प्र का र्का
ति हंतु पारि सं वा त्या प्रा ता मा य त्रि यं म त ॥ मने भे ग म कु र्ये न तव क र्मे भु जि वति
॥ ५८ ॥ स र्ज्ञान वला दगे नि फलं को रि धा भवे त हिलो के पर वै व स र्ज्ञानि व स र्व द ॥ ५९ ॥

दस सत गुण लक्षे दसा पि पं व क क वी त ॥ सत क दु ल उ ह्व सौ वलां को गुणं भवे ता ॥ ६० ॥
वडि या प्र का ले भा ल न वा धी प्र ता ये वि भ न ला ई भं ग न गारि सं पूर्ण का र्मे को र्था ह्व ॥
॥ ६१ ॥ वा यु ह्व न मा जि व स्थि ता रे र के रि जि व को ध्या न ग र्नु जि वे अं ग नि त य पु र्ण गनु य क्षे त र
हि स वे द काल मा पु छे जि त ह्व ॥ ६२ ॥ स र्व ल का भा गा डि को टि व ल प नि स्फ ल ह्व ई ह्व मा प
नि फ लो क मा व रि स र्ज्ञान व लियो क भ नि भ द ॥ ६३ ॥ दस अ मृत ला ह्व र ता जा को व ल स म
को रि ई ह्व को वा ल ये ती भं द ॥ स र्व ल लु मा ह्व भं द ॥ ६४ ॥ दे वा व ॥ ॥ ६५ ॥

पर हरे र म नु ष्या ना पु छे प्रो क्तं ज ये ल मा ॥ अ म पु छे त म पु ल स म नु ष्या नां क र्मे ज ये ॥ ६६ ॥
ई शो र व वा व ॥ ध्या म दे वं स्थि ते ज व म नु मा जि व सं ग मे ॥ अ क सि हि र्च वे त म म हा
सा भो ज ये ल था ॥ ६७ ॥ नि हा का र स म त पं नं सा कालं ज ग त ॥ त त्ता का रं नि हा का रं
ज्ञान भ व ति त म मे ॥ ६८ ॥ ॥ ई ती सि वो मा र्गं वा दे क न व प्र का र्ती त प व न वि ज
म म ह्व प्र का र्ता ना म त त मे ध्या मे ॥ ६९ ॥

मुमलार्हसुदि आनन्दवेलामा यतिकर्ष गर्नुपादिवा जेजो लोबु म्बन गर्दि ॥१२॥ कासि निवन
लार्ह कासिनी यस्तप्रका लेवस्यदं देवाती तयो साव कसै र्दि कसै सं

मुमलाईरुदि आनन वेला मा यति कर्म गर्भपादि वा जेन जो लोबु मन गर्दि ॥ १२ ॥ कासि निवन
 लाई कासिनी यम प्रकारे लेवपुं दुहे पावीति जो वात कसे लाई न कहनु ॥ १३ ॥ १३ ॥ १३ ॥
 ईती सिवो मा संवादे कनव प्रका रवि रुपवना वरु येव सिन राणा स वरुयो ध्याये ॥ १४ ॥
 गर्भ प्रका रणां विंः सनु काले कन अवेना रिपं व मा सि यदा भवेत् ॥ अर्थे बंदु भस्म
 जो मे मे व पुत्र सं भवेत् ॥ १५ ॥ सं ख वलि गवा दुधं पद्या थ वह ते सदा ॥ भुंर
 मे व देवा क्य व दे रि त्रि रि देव व ॥ १६ ॥ सतु क्षा लां पी वे ना रि सनु दानं तु यो जगत् ॥
 सप ला भ त्व सं पं नो न र सिं ह प्र स ये ते ॥ १७ ॥ १७ ॥ १७ ॥ १७ ॥ १७ ॥
 अं ल गर्भ प्रका रणां ॥ रि सनु काल का पा व दिन मा अर्थे बंदु को को गरी रि लाई स
 तु दान दे व स पुत्र ह व ॥ १८ ॥ सं ख पु की पु रि भयो जाई को ३२ भयो लो व सा ति कन
 आ क्ता भर्त का ३२ सा सा गी ॥ १९ ॥ सनु लन गरी पु रि दि ई कन सतु दान दे व स व दो से र
 ल से न को व ती हे पे य र व ॥ २० ॥ शुभ रा शुभे अथ न सतु दानं तु यो जगत् ॥ सप ला व र
 सं पं नो न र सिं ह प्र स तु यो ॥ २१ ॥ अं ग रि न प्र सा ने लु जा ये क क विं ह ॥ विष मां के दी
 वा रा डी विष मां के पी ना धि मे ॥ २२ ॥ बंदु ने मो त ल पु वं ध्या पुत्र स वा पु ना रा ॥ रि ला रं मा
 द ई पं मां ल म ला ते सु वा कर ॥ २३ ॥ अन न रु म यो मे क ना द स व द नं दु का ॥ गर्भ धानं
 मा र ते स्या व दुः ख द सा र का तो वा र ये मो खे उ क ॥ २४ ॥ २४ ॥ २४ ॥ २४ ॥ २४ ॥
 शुभे मा सुभ रा भ सा का विला सा सतु दान अं ग रि न भया को वा ल र व वै द ह व ॥ २५ ॥ विष म
 ना डि सा शुभे रि लाई द ही न मा का रा त सा का वि स मे रिं दि ह ॥ २६ ॥ जल त ल र आ रि त ल मा
 सं ग म न ल वा रि लाई पुत्र ह व ॥ २७ ॥ पु र ष रि आ रं भ ग री वे ला मा सु र्भे पु र ष को वं दु रि
 को र स प्र का गो ल दै व उं ह व ॥ २८ ॥ आ क्ता वं द ना डि रि को शुभे ना डि मा सं भो ग ग मा रि
 ले ई रु दै नं त स र्भ आ क्ता स र्भ रि को वं द ग रि भ ग ग री व र्भ हं ह ये ई कं अ ले ॥ गर्भ वि वा र
 क रि ह वा पु त ल मा दुः ख दिं ह जल त ल मा सुः ख दिं ह जल त ल मा रि भो ग ग रि जं म को पुत्र ध
 न वान भो ग वान सु रिं ह ॥ २९ ॥ आ क्ता स त ल मा ग र्भ न हं ह आ रि त ल मा कि न हं ह जं
 म भयो भु मा ते न रिं ह अ र्वा कि त ल मा अ सु भ ह कि ग र्भे रं दै न र लो भ मा जं म न्या वि
 हं के म र्भ ॥ ३० ॥ वं व भ मा मां ॥ ३१ ॥
 धन वान भो धा मु क श भो वान गर्भ सं गी त ॥ सा रि व वान ते ज र वं को मी ग र्भो वि न स्य ती ॥ ३२ ॥
 सा हे र स सु तो प रि वा न तो दु रिा भ वे त ॥ ले वे पु ग र्भ रि ला वि सा त जा ये तो मा न सो अ रि ॥ ३३ ॥
 ई ती ती वो मा सं वा दे गर्भ प्रका रणां वं व भो ध्या ये ॥ श्री सं भ भ लो दे व वा वा ॥ ३४ ॥

अथ सप्ततत्परणकरां॥ वैत्रल्लि प्रातर्दि प्रातस्तवि अस्तवत्तु यो गिद
मितो नो कृतयेतो॥२३॥ तद्वे वस्य वेलायां वह प्रानो यतस्त॥ पश्चि व्यापस्तथा वायु
लुभिदं सर्वसत्पत्रं॥२४॥ तत यो गि भयवो र्दुर्गिदकालतस्त॥ एवं तत्पत्रं
शरैर्वर्षमासेदमेतथा॥२५॥

अथ संवत्सरः ॥ वैशाखी राज १ प्रति पदा को मात काल मात तनिर्णीयारियो गिजन हस्तले
ह्रीं माजिती काल ७ वरायता ५ क्षिता माता को विवार गच्छेत् ॥ ८३ ॥ वंद्य विवार गच्छेत्
चित्तु वा शुभं त्वं भव्यं संवत् आनंदं हव्यं ॥ ८४ ॥ अग्नि तत्त आ का स तत्त अल्ला को म
का अकावरो म रोग हव्यं ये सौ प्रका रले दिप्रति त्रै लु लं य को तत्त विवार गरोत् ॥ ८५ ॥
मध्यमा भवति कुरु दक्ष सर्व वमर्षित ॥ देस भंजे माह रयं लल कक्षा दिदुः खदा ॥ ८६ ॥
मेव सकांति वेलायां सरो दे मे विवारो म म र कल व्र या धकाना तत्त विंतका ॥ ८७ ॥ यथि
व्यदि क तले नादन मा स वृजं फलं ॥ सो भवं तथा दुष्टं वा स वा र ता वद्विभि ॥ ८८ ॥ स जि
क्षै रायु वीक्षित्या दुष्ट स त्या व स धा वदु कीष्ट तया सौ कं पथित तत्त वे दधि ॥ ८९ ॥ ९० ॥
सुअना र अ का स तत्त हव्यं सर्व वाट मा अल भद्रा जे अक्ष वरो ते ग प्रा व हव्यं ॥ ९१ ॥
मेव सकांति का पा त काल म मा तत्त विवार गच्छेत् लोक लाई सौ स र ता को फल कहता ॥ ९२ ॥
यथि तत्त जल तत्त भव्य आ हा दिन मे हा दिन मा स वे लाई अक्ष अक्ष अग्नि तत्त वा शु तत्त
अ का स तत्त भव्य अश्रु भद्र ॥ ९३ ॥ केवल अग्नि तत्त भव्य अकां हेलो तत्त वे विक्षि
लेला वालि विक्षि हेलो ॥ यथि तत्त भव्य जल की की सौ स स वे लो स रिव ह्वेन ॥ ९४ ॥
अग्नि विक्षि सु अक्षि अक्षि दारो गं सौ मे मे व ॥ वृ स म्प स तथा यथि आप तत्त वे या ॥ ९५ ॥
उभि क्षं रायु भंग्य दो गो स र स द हरा भव्य दहा ता र विक्षि तत्त वे या ॥ ९६ ॥
अप्यो तो प द वा अग्नि र म्प विक्षि स र तत्त ॥ मे व सं कं ति वे ला यां वा शु तत्त वे या ॥ ९७ ॥
केवल आ का स तत्त भव्य अप्यो त क मये कौ लो क लाई अने की दुः ख ह्वे अक्ष वक्षि ॥ ९८ ॥
उभि क्षं रायु भंग्य ह्वे ते पनि अ का स तत्त भव्य वे ति न व ह्वे पु न्ना स तत्त भव्य सर्व सी
क्षि ॥ ९९ ॥ शु र्ये वं द्र को मा वि वा ट ग रि ति ह्वे केवल आ का स तत्त अग्नि तत्त भव्य ॥ १०० ॥
मे व सकांति वे ला यां वे म तत्त वे या ॥ तत्रा वि शु ष्प ता यां स म्प दितां
स र स म्प व ॥ १०१ ॥ पु ष्प प्र वे स ने लां से स स तत्त वे या ति दु द्या ॥ स र्ये वं द्रे न्म यां ॥

ते संग्रहस्तुतिदिदा ॥२४॥ जेष्वंहीतवस्थजायते केवलतथा ॥ नकुर्वीतवस्तु
संग्रहस्तुतिदिदा ॥२५॥ यस्तो वीरावादिस्तुतिदिदा ॥२६॥

उक्तं प्रथमं लोकांस्त्रयं तत्रैव सिद्धिदा ॥ सर्वे चरेन्मया ॥

ते संग्रहस्तर्हि सिद्धिदा ॥ १४ ॥ मेघवंदी तत्र स्थिता यते केवलतया ॥ न कुर्वीत वस्तु
संग्रहस्तर्हि सिद्धिदा ॥ १५ ॥
पक्षो नीवादि कन दुर्वे मे ह्यभिधे भ्रातृकुले निगर्नु भुर्धे स कांतिपन्मा मास्तर्हि
गलीतह ॥ १६ ॥ सिद्धेला मा आका तत्र पाशु तत्र अग्नि तत्र ह्य भव्या भव्यो रजा काल परो ह
॥ १७ ॥ मेघ संक्रांतिका प्रातः कालमा अग्नि तत्र ह्य भव्या भव्या तका पक्षि अंन आदी यतां ॥
ह्य दुर्धे भुर्धे तस्यैव वस्तु को संग्रह गर्नु ॥ १८ ॥ २
रवौ वा संक्रांतो राशि गता ते व प्रमत्पति ॥ स्थानि ले वदु को मे विरौ र वं जगति तले ॥ १९ ॥
रति सिद्धो आ सं दो कन व प्रका स वि तृपवन विज ये संवत्सर प्रकर तां च व म जो
प्राये ॥ श्री ॥ देव उवाच ॥ अथो गत कर तां ॥ अहित ह्ये सु रो गं व ले व जल मातर ॥ ते
जति वे र ता लो व सा किमि प्रे त दोष के ॥ १९ ॥
रवि संक्रांतिका दिन शुर्धे व द्रका विष मेमा वाशु तत्र अग्नि तत्र भयो भव्या लोक लाई म
ने क दु ख ह्य ह्य अने करे ग ह्य ह्य हा हा कार होला ॥ २० ॥ रति प्राजा यां ज म ६ म
ने पार्वति रोग को हि पृथक् पथि तत्र ह्य भव्या ते हे देह मा रे ग क मं नु जल तत्र ह्य भव्या जल को शत
मात्र को दोष ह्य आका तत्र पाशु तत्र ह्य भव्या पत को दोष ह्य सं किमि दोष ह्य ॥ २१ ॥ २० ॥
आदौ स न्य गते उते पश्चात्पुनो विम मदि ॥ मुक्ती तो विष्व वं जि वे अर्धे परि पक्षति ॥ २२ ॥
यस्य त्रयो वितो जि वे स त्रि वि परि पक्षति ॥ तदा जि वा त जि वो सो मे दी रो रो ह्य पृथु त ॥ २३ ॥
दक्षीणे व रसा दा वा शुः रव से द्रा क्ष रे व दत् ॥ तदा जि वा त जि वो सो वं द्रो त म फलं म तं ॥ २४ ॥
जि वा का र व वा ध त्वा जि वा का रे व लो क्य वा ॥ जि वा तो जि वा ते व द्रो त म फलं म तं ॥ २५ ॥
अथ ब्रह्म नाडी मापु द्यो त पक्षि नाडि पूर्य भयो भव्या मत्पु ह्ये देन अवस्य वाचना ॥ २६ ॥ पूर्य नाडिका त
फपु द्यो त उ म द्ब रोग ह्य तप नि मत्पु ह्ये देन ॥ २७ ॥ दाहिना पूर्य द्वा डं ति र्भु म्भ ह्य तप नी य डो रोग ले पीडि
तप नि पूर्य ति र्भु म्भ ह्य तप नी य डो रोग ले पीडि ॥ २८ ॥ जीवना इ को हि ह्य न्या देन जो न ती र्जीव ह्य
स्व हि त्वा फ व सि पु द्यो त अय म्भ जी उ द्य ॥ २९ ॥
वामा चो रो ल भा र्ध प्र ये शो य व ह्य व ने ॥ तत्र स्थ पृथु तो दू त स्त म्भ सि द्वि न सं स न ॥ ३० ॥ प्र ये वा धि
स्थि तो जी वो हि जि व ति ॥ कु र्ध चार स्थि तो जि वो जी वो जा ती ग मा द्य र्था ॥ ३१ ॥ वी प रि ता र्वा प्र ज गि
का यो प द्ध को य डि ॥ वि प र्ये य व र्ध वि व म स्तो द ये स ति ॥ ३२ ॥ व द्ध स्थाने स्थि तो जी व स र्क स्था
ने र्पृथु त ॥ तदा प्रा रा वि म्भ को सो यदि ये व श तै व त ॥ ३३ ॥
वा वा उ च द क्षि रा स्वा प्र ये श का वे ल मा पु द्यो त तो कार्ये सि द्वे च भ नि ह्य न क न भे न ॥ ३४ ॥ पृथु त
दा का वे ल मा उ धो ग रि पु द्यो त भ न्या नी च ये शि उ त्ता भे न उ भो भ या का वे ल मा पु द्यो त भ न्या ति

मर्त्यमनु॥३॥ सुदृष्टामा प्रको भन्या वीपरितभं विवम अंगको वीपरितैरुंछ ॥४॥ चंद्रमात्रिवरस
वमापुशो भन्या हजा रैवलायापनिमत्पुंछ भनिदिन ॥५॥

पिंगला संस्थितो जिबो वामे दूतस्य म् इति ॥ तदापि म् बते रोगी यदा या तम हे भ ॥६॥ यन्त
स्य दूतस्य विपर्ययेन रोगाभि भूतौ भवति दु पुंसां ॥ तयो दु यो वे धु सति पतिः प सो द्वये व्यप
यतो म् ति स्यात् ॥७॥ इति श्री शिवो मास दो कन व प्र कारा चित्त पवरा विजय रोग प्र कारां सप्त
मो ध्याये ॥७॥

सूर्ये मात्रिव चन्द्रमापुशो भन्या त्यो रोगी अयस्य मर्त्य इव रैले रक्षा गरोत्तपनी मत्पु ॥६॥ यके
वर्गारि युक्त पुंछ भन्या कल्पा ए गत्ता विस्वगारि पुंछ भन्या रुके मासमा मत्पु होला ॥७॥ इ
ति श्री शिवो मास वा दो नन प्रकारा चित्त पवन विजय रोग प्र कारां सप्त मो ध्याये ॥७॥

मासा रौ वत्स ए दौ च पक्षौ दो च यथा क्रमं ॥ अयं काल परि शेत वायु चारं ब मासु धौ ॥८॥ पंच
भूतात्मकं दिपं शुद्धि हेन चिंतनं ॥ एते यत्सूर्य वातेन सो यजि व स्थि रो वत् ॥९॥ मासु तं
वैधुत्वात् सूर्ये विधियते यदि ॥ अभ्यासा जीवते जीव सूर्य काले वि धि चेत् ॥१०॥
अथ काल ज्ञानं ॥ मेनो का अधि ह्यस पनि वर्ष का अधी ह्यस पनी सुदृष्ट भ का म वि चारु न ॥८॥
पंच भूतात्मा पि दिवा ए गत्ता न पि ते ल पू रणि न सूर्य वायु वा व न न्या जि व स्थि र्दि ॥९॥
सूर्य वायु वायु को हि रो ला अ भ्या स ले जी व क न सूर्य पि काल दे वि व चा उ न ॥१०॥
गगना तश्च वे ते च न्द्र काय प प्रा नी सिं ध ये त ॥ कर्म या ग सो र्त्मा से र मा शु शि नी श्र या त ॥११॥
शु शां की चा ये द न्नो दि वा चा र्क्यो दि वा का इत्था भ्या सा तो नी त्प स यो गी ना व सं श य ॥१२॥
अहो रा त्र य दे क च य ह ते य स्म मा स्तु ॥ तदा त स्म भ वे द्यो य स म्पू र्ण वत्स र व यं ॥१३॥

आकाश देवि चंद्रमा दे वि प न्या को अमृत ले काल रूपि कमल कन सी चिन गन् ह स्ता कर्म ल
योगा भ्या स ले ज्ञा हा तो दि चंद्र मा द इ ता हा तो दि अ म्वा ह व स ॥११॥ रात्री मा र्च द्र व वा रा त्री मा र्च
इ व चा उ न दिन मा सूर्ये व चा उ न य स्तो अ भ्या स ग न्मा कि न गो जी ज्ञा न सं धे ये न ॥१२॥ अहो रा त्र
मा उ वै सा र्ग गै च लो ल उ वै व र्ष मा म त्पु हो भ नी ज्ञा न ॥१३॥

अहो रा त्र द्यो स्य पि पी ग र च स र गत ॥ तस्मै व य दं य प्रो क्तं जी वी त त त्व वे दि मि ॥१४॥
त्रि का र ह ते य स्य वी र क पु टे स्थि त ॥ तदा स म्प त्त हो य म् प व द ति म री ति वि मि ॥१५॥ रा त्री
चंद्र दि वा सूर्ये व हे ये स्य नी र तां ॥ वे द स्य च वै म त्पु से मा ह न च ज्ञा नी या त स्य ये म त्पु च
न्या सा भ्यं तो भ वे त ॥१६॥ ए का दि वो उ शो हा नी यदि भा नु नी र तां ॥ वे द स्य च वै म त्पु
से वा हे न च मा सि के ॥१७॥

अहो रा त्र मा पिं ग ल च ल्यो भ न्या उ वै व र्ष मा म त्पु हो ला भ नी त त्व ज्ञा नी ह म्भ द न् ॥१४॥ रा त्री मा र्च
म र्के स्या मा वा य र हो ला ह क व र्ष मा म त्पु ह व स ॥१५॥ रा त्री मा र्च द र स्यो दिन मा सूर्ये र हो भ न्या
सं धे ह स्य का लो हो व न्या ह स्यो दिन मा सूर्ये र हो भ न्या

अहोरात्र मापिंगलाचलोभन्या दुबैवर्षमास्तु होला भनी तत्वज्ञानी ह्म भवत ॥१४॥ तीन रात्री सं
मष्टकैस्वामावाय होला एक वर्षमास्तु ह्म ॥१५॥ रात्रि भाचंद एस्वो दिन भास्ये एस्वो भन्या
सधै ह्म सुकारले एस्वो भन्या घमै ह्मामा पुस्वो ह्म चमसि होला भनी ज्ञान ॥१६॥ शोध दिन पर्यंत
सूर्ये एस्वो भन्या एक महिना मास्तु होला भनी ज्ञान ॥१७॥

संपूर्ण विहते सूर्ये चंद्रमानेन दृश्यते ॥ पक्षेन जायेते सूर्य कालज्ञाने शुभाशित ॥१८॥ मृदु
दिवसाय च ममकाले प्रयत्नो ॥ मासेन जायेते सूर्य कालज्ञाने शुभाशित ॥ तदा सोचीते जायेद
साहे जियेते कुर्व ॥१९॥ संपूर्ण विहते चंद्रसूर्ये नैव दृश्यते ॥ मासेन जायेते सूर्य कालज्ञाने
शुभाशित ॥२०॥ अर्धयंति कुर्व चैव विहते शिवा पदानी च ॥ आयुही तान पश्यंती चतुर्थ मा
स नंदत ॥२१॥

सधै सूर्ये मात्र चंद्र चंद्र चंद्र देन भन्या एक महिना मास्तु होला भनी ज्ञान कालज्ञान मा भन्या कोट
॥२२॥ सधै चंद्र चंद्र सूर्ये चंद्र देन भन्या एक मास मास्तु होला भनी कालज्ञान मा भन्या कोट ॥
१९॥ आराणि साप एकैव यत मार्गो भन्या दशदिन मास्तु होला भनी ज्ञान ॥२०॥ अर्धयंती
ता एभया कुर्व ता ए संपूर्ण ता एती ना ए भया मास मंडले भया आयु दिन दृश्यता इदं दे देन ॥२१॥
अर्धयंति भवेति ह्म कुर्व ना साप एक च ॥ कुर्वो विहते पदेने यता का मास मंडले ॥२२॥ इति ध
बोस प्रथो व पंचता एती ना ही का ॥ शी ह्म यव दिन प्रोक्ते मयते मानवो कुर्व ॥२३॥ कोन समा
गती भ्या किंचित्पियनी रि सये ॥ यदान दृश्यते विहते मसेन जपो मते ॥२४॥ इति श्री शिवो
मास वा दोक्त नय प्रकारे चित्रपवन विषये का ल ज्ञान प्रकारां नाम भक्त मध्याय ॥८॥
नौ भात्रि सातस्व एकता एना पांच रतीन ना खाजि ह्म दुह ह्म सो देखो भन्या अवश्य मस्तु तजि के द
॥२३॥ आरंभ को मा भंगुला दिदा विंदु देखेन भन्या दशदिन मास्तु होला भनी ज्ञान ॥२४॥ इति श्री
शिवा मा सेवा दे भावा या जव मो ध्याय ॥ १८॥

अथ नाडि ज्ञान ॥ इडा गेज निविज्ञा या पी गला मुप्रता भवेत् ॥ मध्येन खति
गंगा प्रयागा संग मतया ॥२५॥ आये सध्वन मा र्वा र्त ल म प्रत्यपका र्क
प्रद्वपका लने ये जिव ह्म ते दुदियान के ॥२६॥
तिर्लक्ष्म दानत पवत ध्यान योगी कन काल उर्ध्व भनि ज्ञान अवतारि भेदज्ञा
न भंडु ॥ इडा नाडि गंगा पी गला नाडि य मुन मुपान सखति चोति संग भ
मापदि प्रयाग भनि प्रथ मासा धमा भंडु वृद्ध पक्षा लन गदि को मल आस
न मा वलि कपा वि त द ह्म गी कला प्रयाग भ गनु ॥२६॥

प्रक कुंभक शै वरेव कंतु रति य कं॥ ज्ञा त कं यो गि नि नि सं दे ह तं ति द्वि
है त ठे॥२०॥ प्रक कुंभक शै वरेव कंतु रति य कं॥ ज्ञा त कं यो गि नि नि सं दे ह तं ति द्वि
जि व र दो वि वृ नं॥२१॥ देव के हरे ते पापं कु र्ये योग पदं व जे त॥ पश्चात्
त ग्रा म व ति वृ य ल तं धे न का र य त॥२२॥

प्रक कुंभक शै वरेव क यो गि नि प्र का र का प्रा णा या म ह प्रा णा या म ग न्धा प दि
रा रि भु डुं ह भ ति जा नु॥२३॥ प्रक ले धा तु र्णी रं ह कुं भ क ले जि व को र
ध्या रं ह रे व क ले पा प न ह रं ह॥२४॥ देव के ग न ले स वे पा प न ह रं ह र यो गि ह
ले यो ग प द क न पा उं ह॥२५॥

कुंभ य स ह नं वा या यथा स ह्ना प्र य त न रे व ये व वं द सा गि नि प्र के प
र मे स धी॥२६॥ वं ड धि तं त स ये धि वं ती वं द मा॥ अ न्ये म काल भा वे न जी वे
वै द्य क र्ता र कं॥२७॥ शि या मे व ह ते रा ण डि तं ना डि टो ध नं कु र्ता॥ म ह व द म म व
तं प व नं जा ये त मु षा॥२८॥

कुंभ क ग दि उ ह ग ही वा यु था म नु यथा स क ले वा यु र का ग र रे व क सा वा यु
हो डु॥२९॥ अ रि ग न्धा प दि स सा धि सा ला ह कु र्ते र वं ड ले स ये धि वं त स ये
ले वं ड पी डु य सौ अ न्यो वे काल भा व ले आ यु क न व ह रं ह॥३०॥ के र को
आ प्ला डि तं न ना डि क न रे क नु म र ता वं ध ग न्ते र ति लु क ह॥३१॥

पु र व ना सा धि क र्ता अं अ गु लि नि र्नी रो ध य त॥ त त द ये मि ति न
यं र व म्भु रि क र तां प्रा य॥३२॥ त ह्य त प ग ती त्वा दो मं उ तं ल डो तं
लि दं म्भो रि सान वो लो के प द्म डु डो धि यो ग वी त॥३३॥ त्रि ग लि ति
स्क लो यो गि न किं वि द धि वी त ये त वा स ना म्भु रि स सा का तं ज ये

पु र वा भ या वा क्थ यो आ र व भ यो ये ति ला ह अं गु ला त क न र र ह सो अ भ्या
त त ग रो क्त त क दो दे म् वा ल पा ड ह॥३४॥ य सै र प ग ती त्वा द मं उ तं दे
व नु म्भु क र ले जो जा न ह डु डु डु न प नि यो गि ह॥३५॥

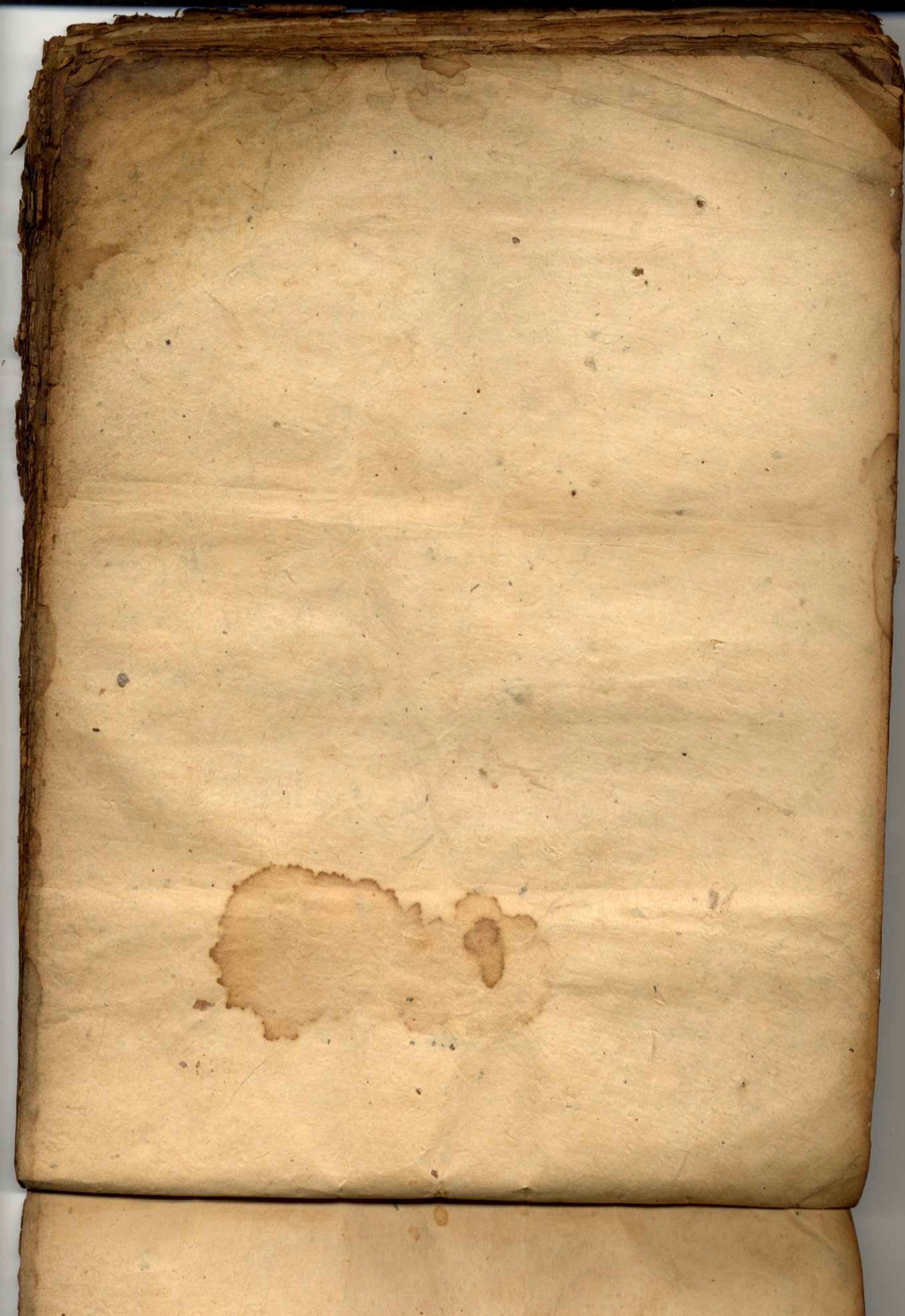
॥३५॥

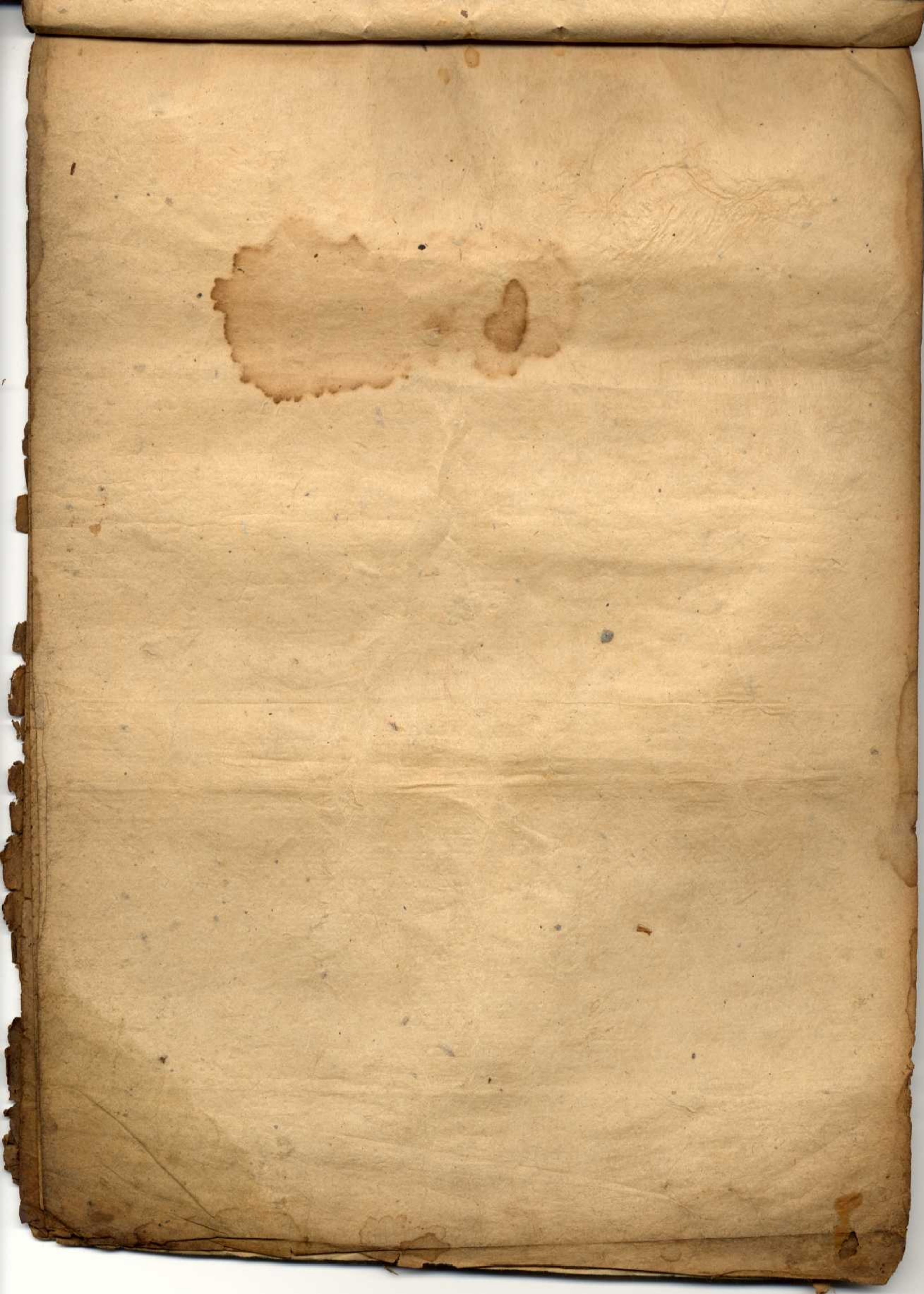
आ सा ई श्वो र ग रि क न स सा धि वा धी कुंभ त भ र्ति क न को दि काल प्र ह्नी त यो
का म ग न्धा ले वि ह वा यु ते स म र्ति न दि ने

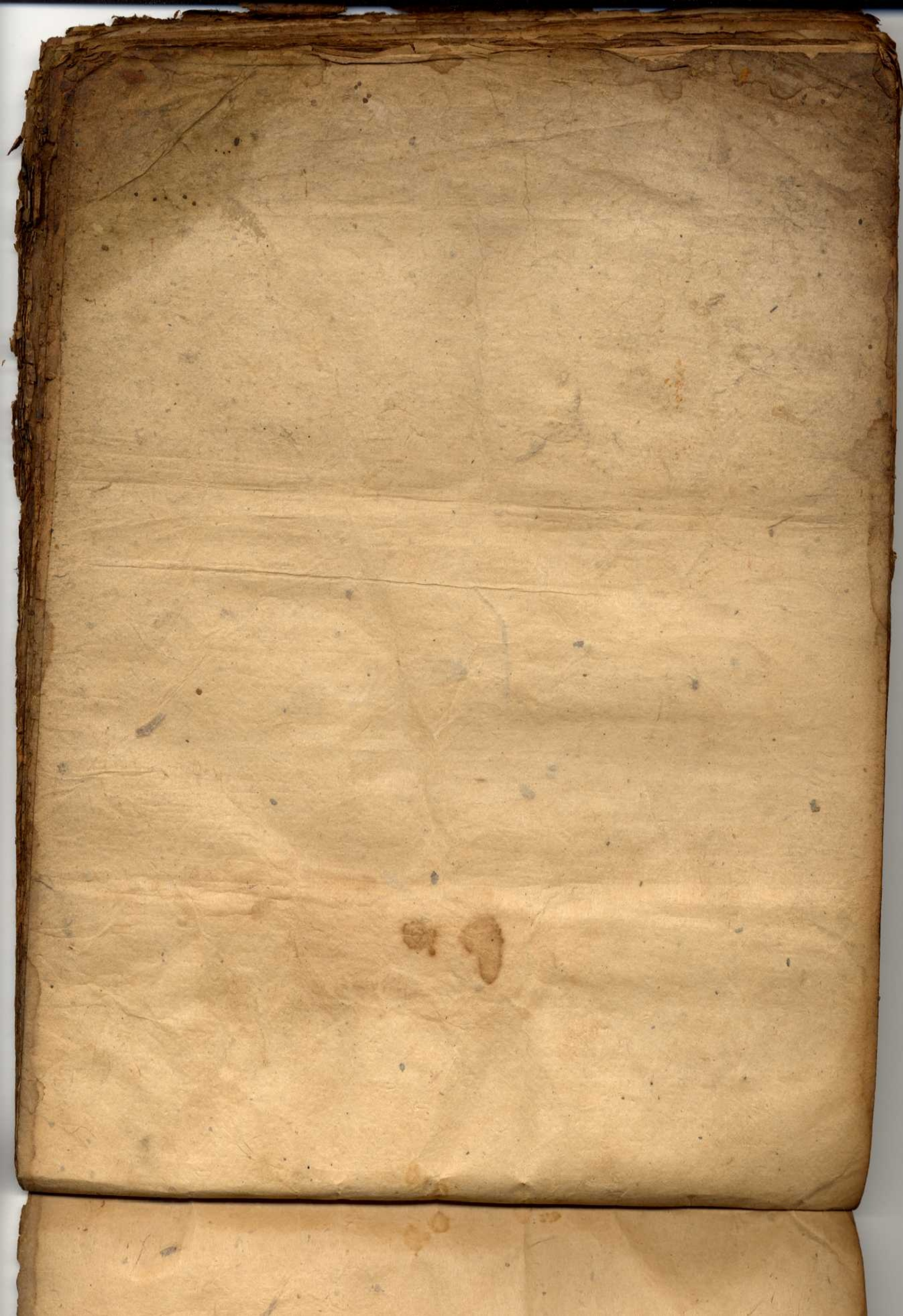
[illegible]

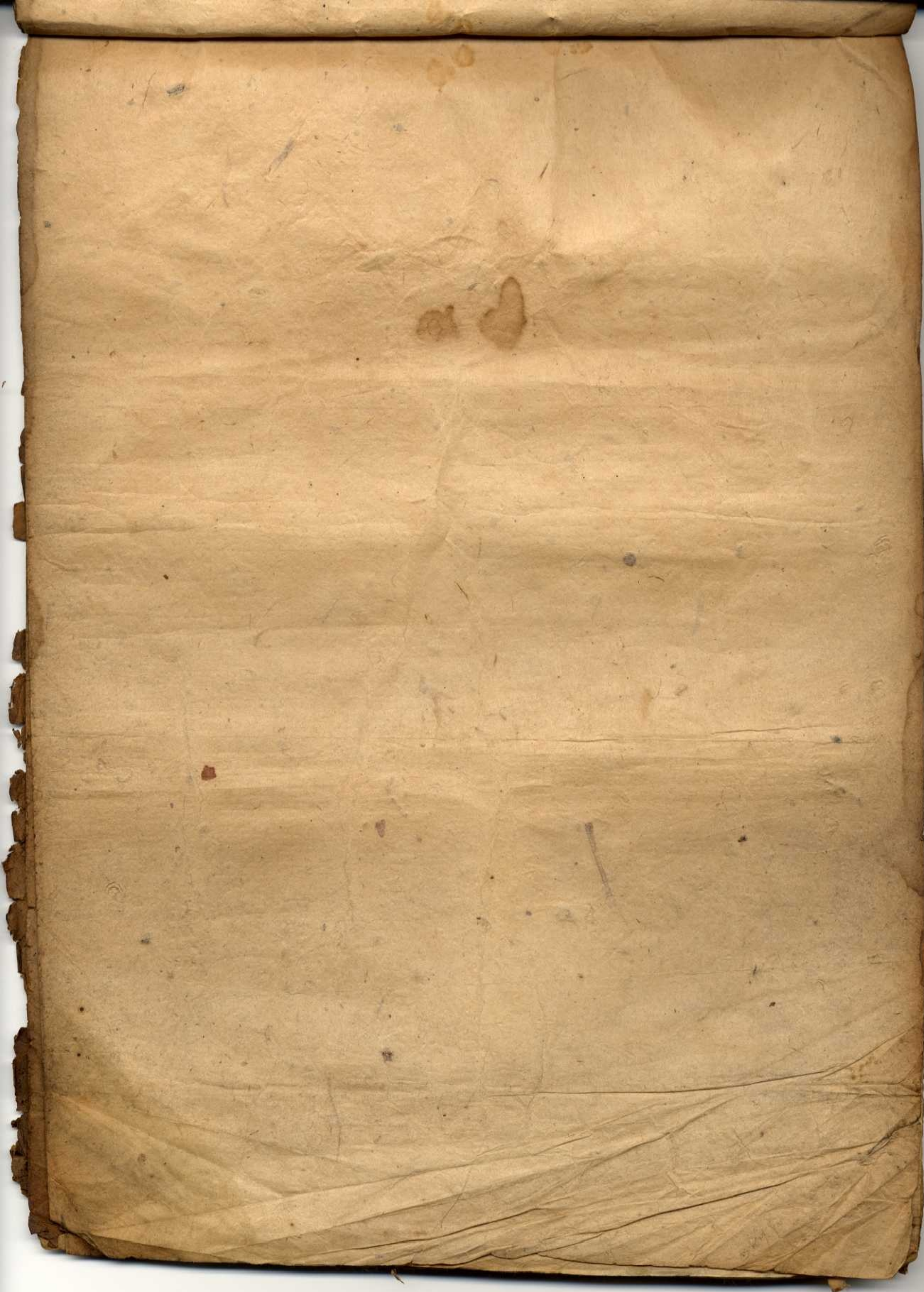
संज्ञानात्कासिपाद्भन्यातद्वीवनिशानकागातिदेवन
वेकत्रजसादिभयोददलवेदन॥४१॥ लवसत्रविषेजसौ
नेव३ हनजसौलुजं दुरतले मल्लोकापास्वशानपावने लाई
जेसा नजद्वर॥४२॥ येतिननाडिरतलशानजोयोतिजामक
लक्ष्यकोरुतयेनपन्यापनितेकोउलोक्क॥४३॥ ४३॥ ४३॥
येकाथप्रपतंतंनानुभेदंनिवेदकं॥पथीयंतयेदुपाव
नपोभव॥४४॥ स्वास्तुतापाशुदेवि वसं यथास्वीयं॥ग्री
दरोगक'राध्या नवप्रकाशावितां॥४५॥ ४५॥ ४५॥ ४५॥
नाडिभेदकोरुकोअक्षत्वतावसुपनितेको॥४६॥ ४६॥ ४६॥
विभाकेहिदेवेनसवत्रनोवरह॥४७॥ ४७॥ ४७॥ ४७॥
द्वभयोवार्तिकार्थभयोगर्भध्यानभयो कालविचारभयोनवप्र
कारलेजुक्रभयाकोवातभनियो॥४८॥ ४८॥ ४८॥ ४८॥
एवंप्रकृतिंतलोप्रसिद्धसिद्धयोगिणीभिः॥अवंद्रार्कग्र
हंजिलेपातेलिद्धिदायकां॥४९॥ ४९॥ ४९॥ ४९॥
सावप्रकाशवित्तपवनविजयोनामेनवभोयोसभयो
येकैपारिकारलि तप्रसिद्धभयाकासिद्धयोगज्ञानोसवंद्र
सर्वदेविपायोतिजिवज्जोपाठपात्रगनीलेसिद्धप्र
हका॥४६॥ ॥४६॥ ४६॥ ४६॥ ४६॥ ४६॥
इतिश्रीशिवोवासासम्बदेकश्रीसंभुमालदेवस्वशान
भवायांनवभोयोध्याये॥ श्री॥इतीसम्बत९२३७साल
शिवेसाकसादि९रोज९माकाश्याइंदेववमावस

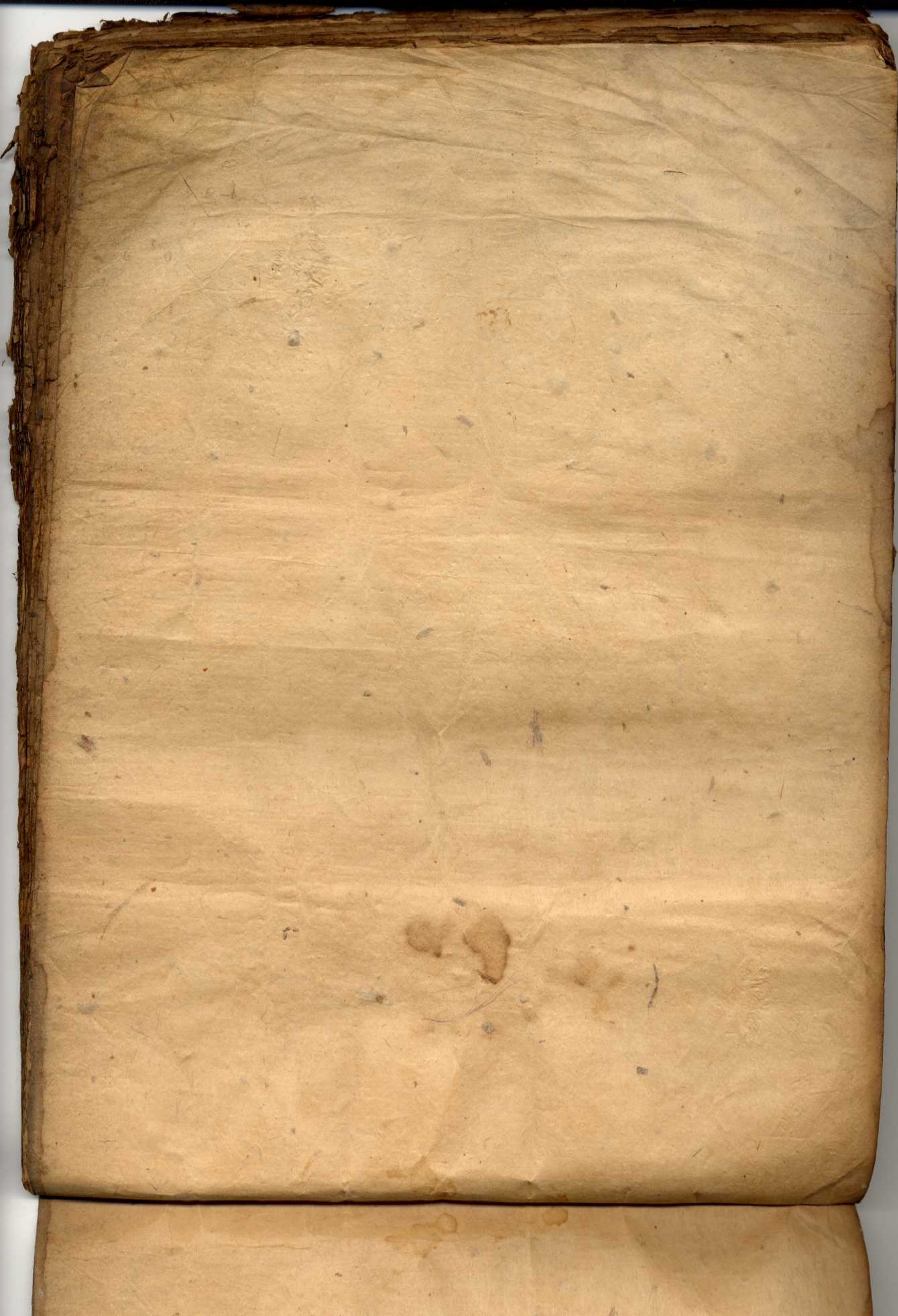
मा तेजमान् लाई योससेदयेकोकोनिलेसिद्धभुसभ
द्वत्रिंशत्काश्रिकालनेरसावदे

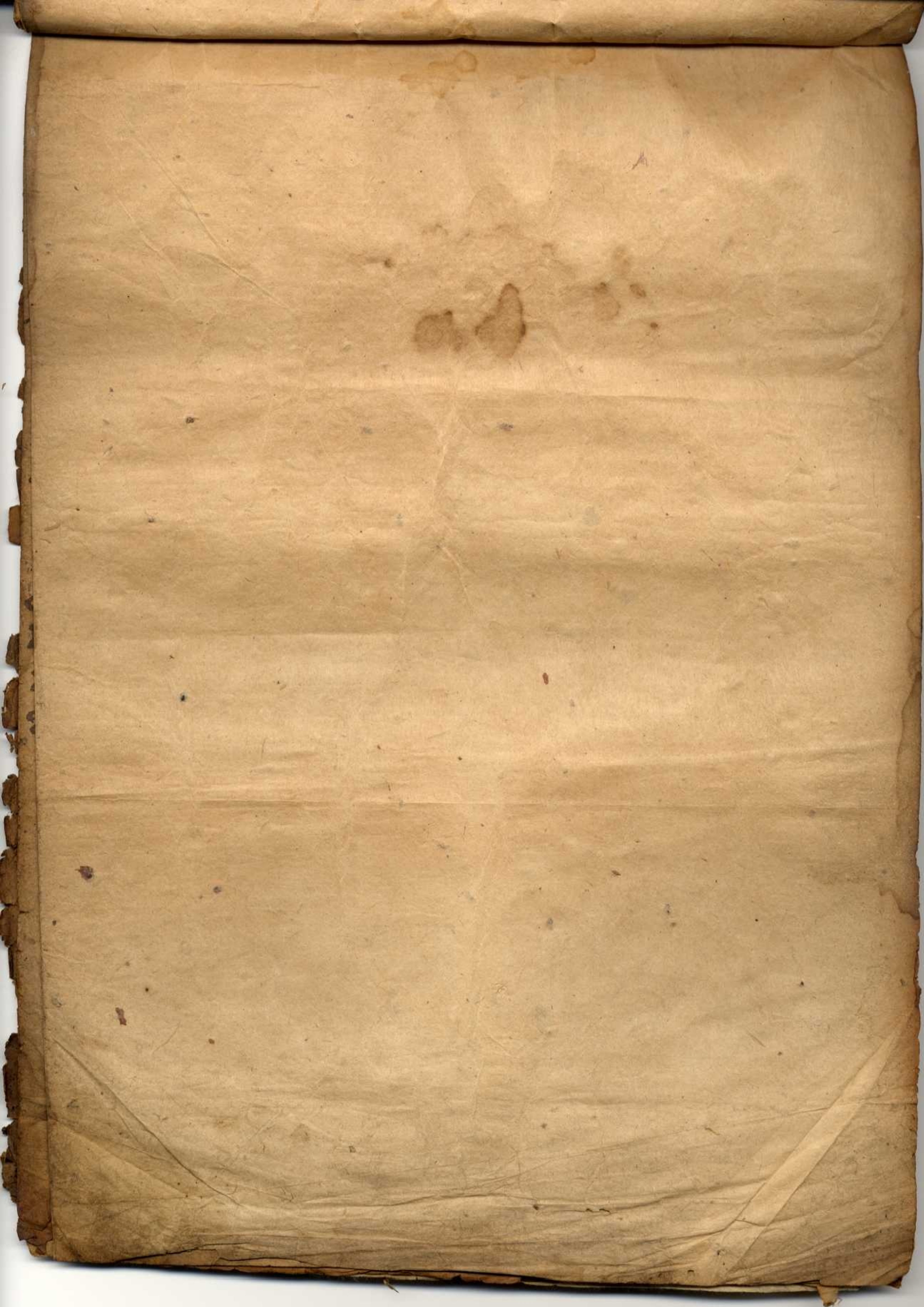








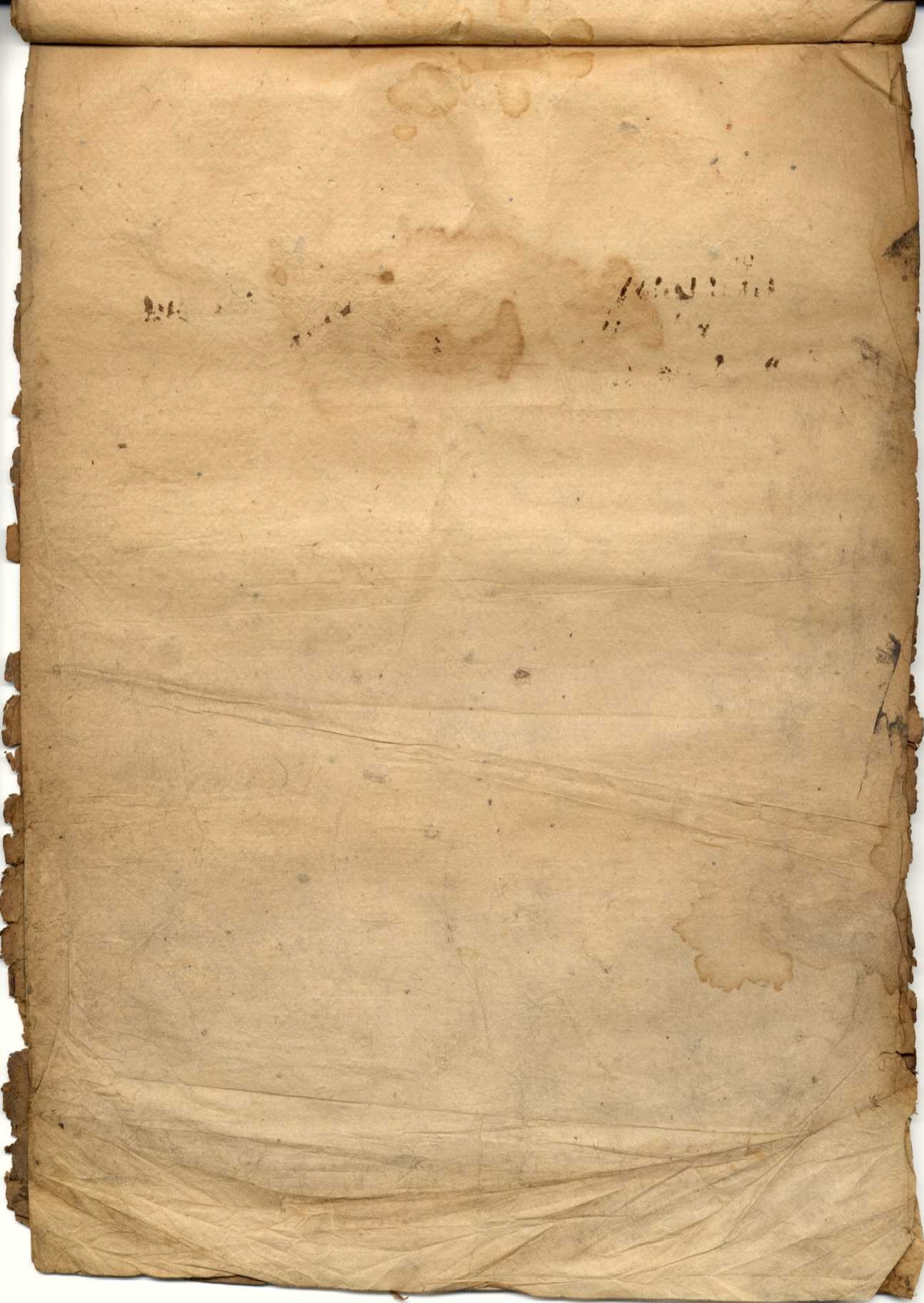


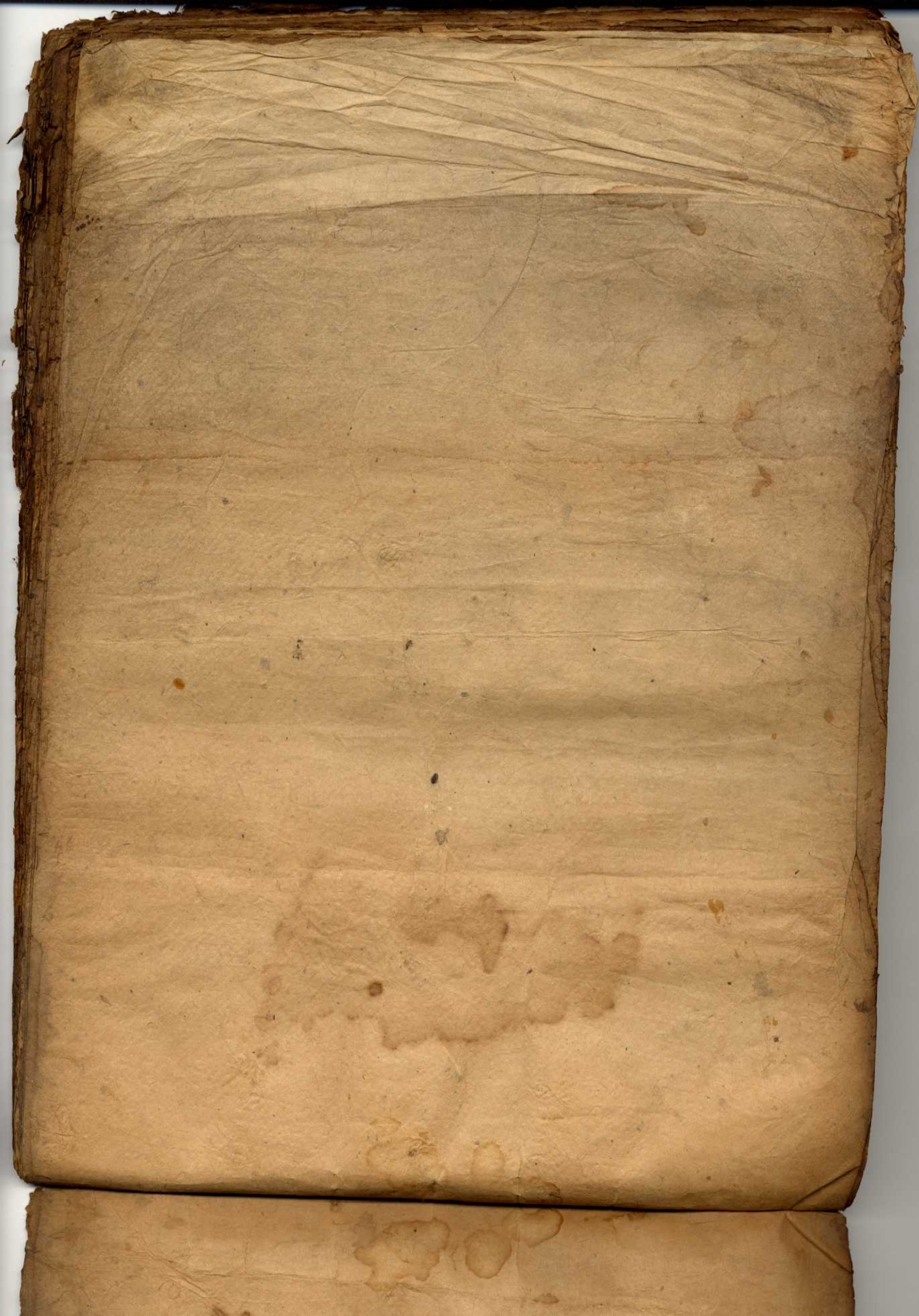


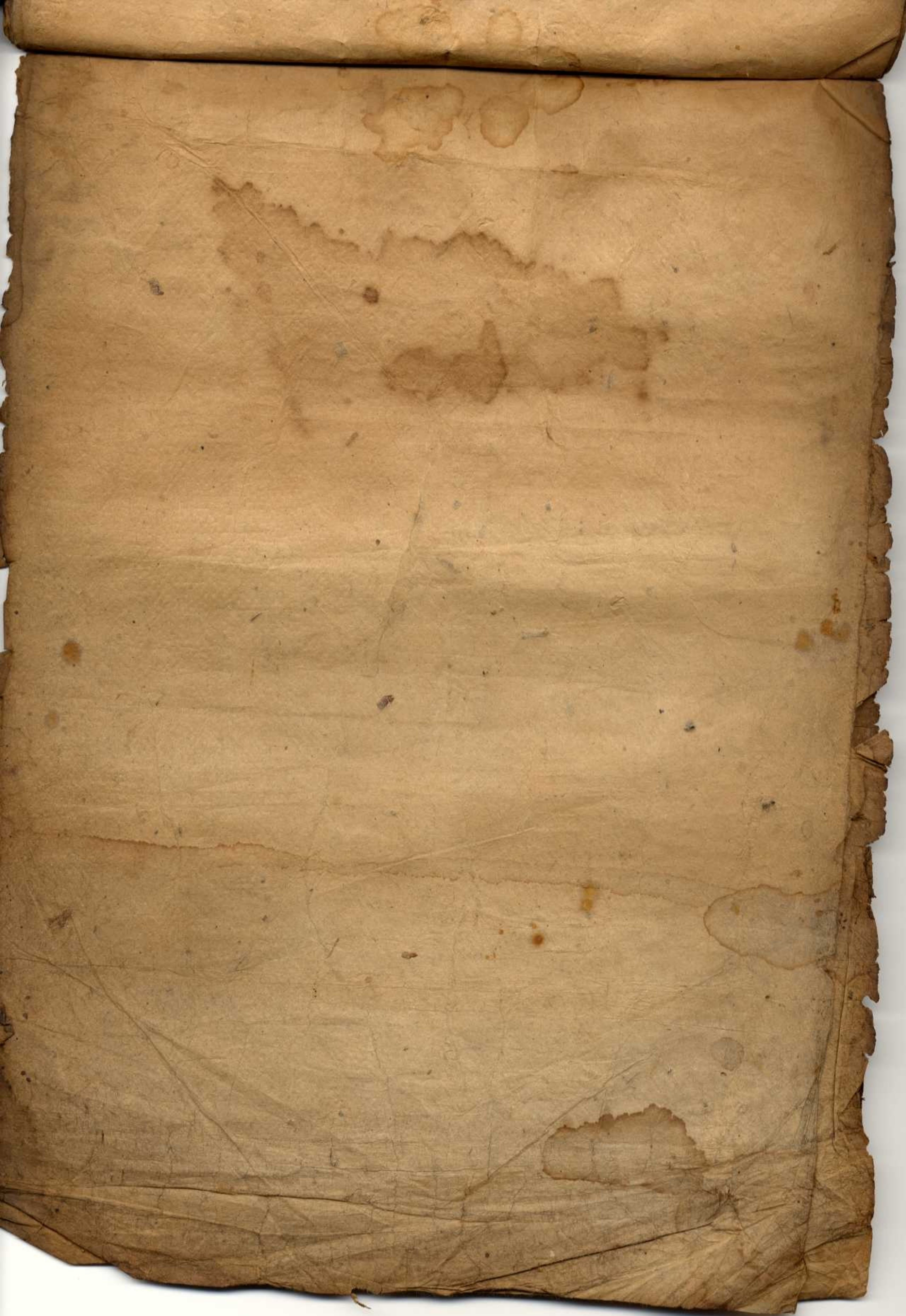
सगवान् ॥ येसी गालेये ती थक्क्यवागलेमोल्लुयः श्रीमो. एव हसन
माय. थे श्री रेसयावालुआरीः श्रीमो रेसयापंतैखरीः ॥ श्रीगो

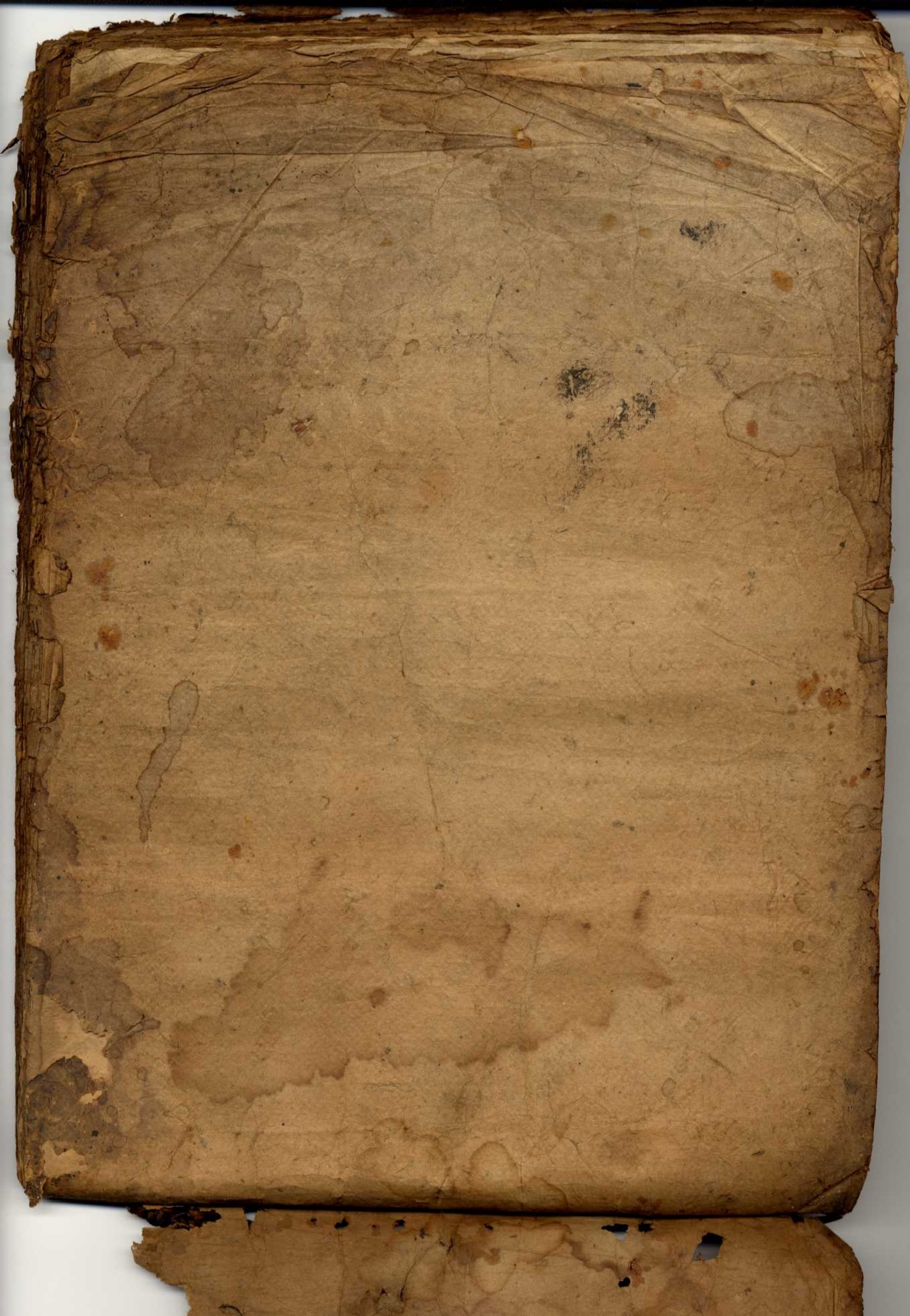
राजवात ॥ येसी गालेये ती थम्बुपागातेमोलुमुयः श्रीमो। एपहरतन
 मायः थेमी रेसयावालकुमाहीः मोरेसया। मंतेखरीः ॥ वीपदे
 यया। मेरप। १॥ लुमुं देसया। मा रसीमीः ॥ जलदेसया तमताही।
 कपा देसया दुषानकालीकर। २। वीना देसया ती यातीमात्रुः येत
 देसया क र्नामा हीः कीपु देसया वाग मै रपद रहनघाय। ३।
 सतुंगमा देसया वीसीनुः थको देसया मा रसीमीः वलमु रैस
 मा वासु रा ही। ४। मे देसया कां प्रजीमाः जोल देसया मु जेस राः
 टको देसया व र्जो। जीती। ५। यल। योया। मग वतीः नको देस
 मा। मोरप। ६। पगा देसया नीलकालीः यसी देसया वालकुमाही
 नाता देसया मा वती। ७। वा देसया तांग मै रपः मे रेसया सर
 सती। आगा देसया ना सकु प्रजीमा। ८। थलपुया लुम रा प्रजिमा
 ही मंगुमाना रा प्रनः मा लेखरी मा सु देवः वीप देसया यागु न
 रा प्रनः। मे ले देसया वीपुंगु ना रा प्रनः फपा देसया ते पन। रा
 प्रनः वीप देसया रा रज वीना। आर्क। ९। जल देसया जलवा वी
 येकंः मे देसया सु सो। वीनाय कं। १०। जोले देसया रा कालीः
 थवी। मा गुर रा रेका तहा ल ता न रा म हरी

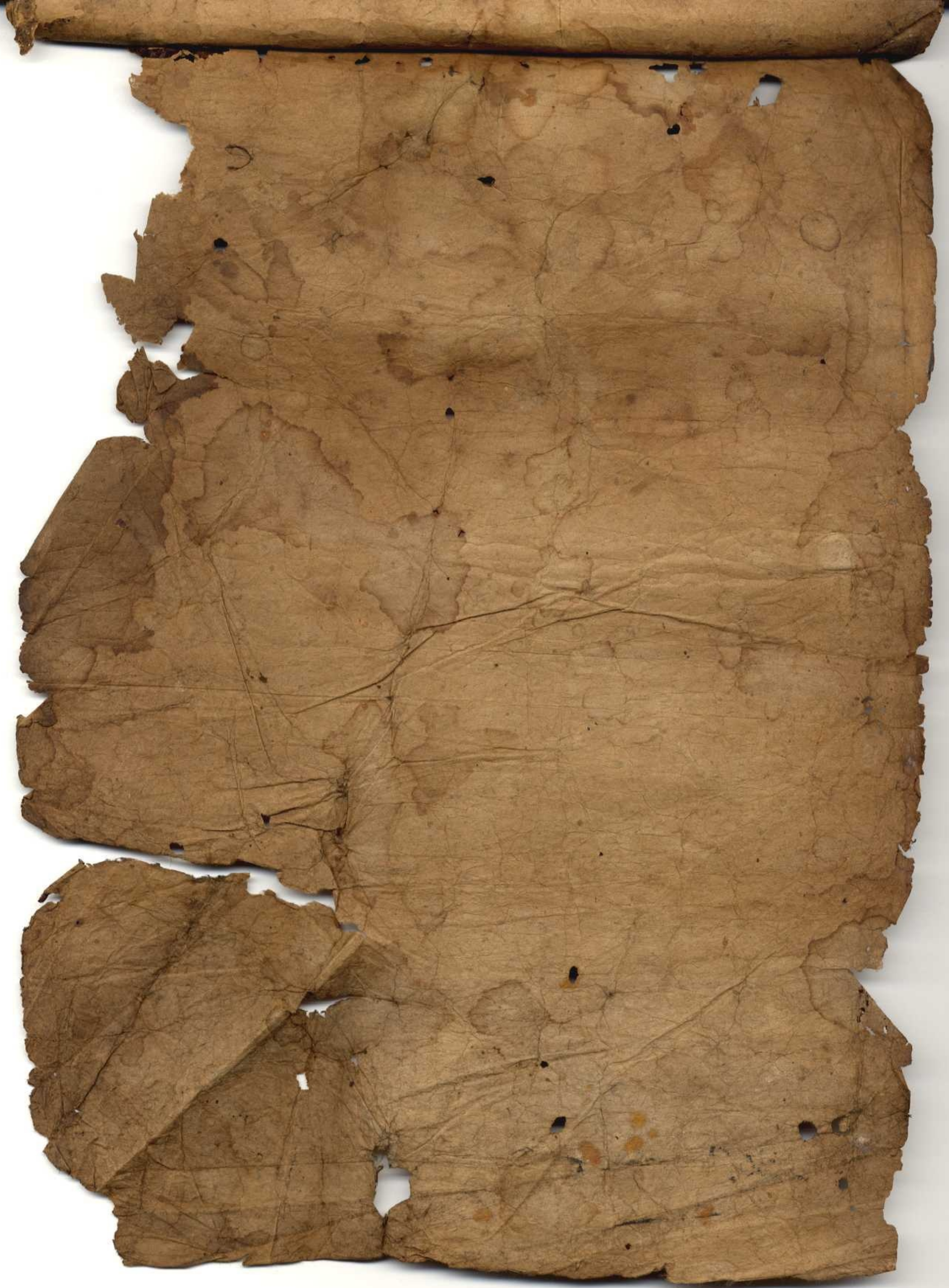
रगघाटु॥॥योसिंजालेयोसिथरोपिंगल्लमोलतृये॥श्रीभै
दुरवडूरसनजायधम्मिडेसयावालकुमारि॥भोडेसयाव
देखरीखोपडेसयाभदूरव॥५॥लुउडेसयामाहालदि
मि॥जलदेसयातमरणिरियफ्रिडेसयादविनका
लिका॥२॥खोरणरेसयासिमाजु॥येलदेसयाककराण
मयेजु॥केपडेसयावागभइर्वदूरसरणात्ये॥३॥स
पुकोदेसयावीहनुधकोदेसयोमाहालदिमि॥मल्लव
देसयावासुरारि॥४॥येदेसयाकुंगअजिमाजोलदेस
याजुजेखी॥सकोदेसयावर्जजोगिसि॥५॥पत्ता
वोकियाभणवतीराकोदेसयाभदूरव॥६॥पांगादेसया
गिलफालि॥७॥सिदेसयावालकुमारिरणलादेसयाभण
वती॥८॥वादेसयापांगाभदूरव॥येदेसयासरध्वती
॥सांगादेसयाणसकुपुजीमा॥९॥नवलपयालुमदिअ
जीमाबवंपुयारणायराआदेखरीमाहादेवसकोदे
सयावंपुणारायण॥१०॥येलदेसयावीसेणुणारायण
फ्रिडेसयासेवरणाशयेण॥खोपडेसयासु
ज्जिवीणायेक॥११॥येलदेसयाजलवीणायक
येदेसयाअसेकवीणायकजालदेसयाणतवी
णायेक॥१२॥ज्यापुरसदयेकातलरामह











2302